RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

अक्टूबर–2023 | वर्ष – 15 | अंक : 09 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)
मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख –
रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें –
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784

शक्ति के बिना कुछ नहीं किया जा सकता

(पूना)

पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार दलित–शोषित समाज संघर्ष समिति (डी–एस 4) द्वारा धिक्कार दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन 24 सितम्बर 1982 को पूना में नागपुर जागृति जत्था द्वारा हुआ। जैसे ही कार्यक्रम आरम्भ हुआ, पुलिस मंच की ओर दौड़ी और लाऊड–स्पीकर बन्द करा दिया जब डी–एस4 के कार्यकर्ताओं ने पुनः चालू करना चाहा तो पुलिस द्वारा मुख्य स्वीच बन्द कर दिया गया, इस तरह डी–एस4 के कार्यक्रम में बाधा डालने का प्रयास किया गया। अन्ततः कार्यक्रम बी.जे मेडिकल कॉलेज ग्राउन्ड में उपस्थित भारी भीड़ के होते हुये भी बिना लाउडस्वीकर के आरम्भ करना पड़ा। दृश्य विचित्र सा लगता था। शत्रुओं द्वारा बन्दूकों से शूट करने के लिए चारों ओर से घेरा हुआ था। ग्राउन्ड के अन्दर भारी संख्या में महिला पुलिस के तैनात किये जाने से पुलिस की चालाकी और उसके इरादे पर संदेह पैदा होता था। उसी समय डी–एस4 के अध्यक्ष मा. कांशीराम जी पुलिस के अधिकारियों से उनके मुख्यालय में धारा 144 व निर्धारित समय सभा के लिए पुनः स्वीकृति हेतु बातचीत करने में व्यस्त थे। अन्त में उनके पास से 15 मिनट की स्वीकृति लेकर वे स्वयं पौने छः बजे लौटे।

अपने संक्षिप्त भाषण में मा. कांशीराम जी ने सम्पूर्ण कहानी बतायी कि कैसे स्थानीय पुलिस ने समारोह को असफल बनाने के हथकण्डे अपनाये आपने बताया कि पहले सभा और जुलूस के लिए स्वीकृति दी गयी थी परन्तु अब अन्तिम क्षणों में आकर स्वीकृति निरस्त कर दी गयी। 144 लगा दी गयी। जब सम्पर्क किया गया तो कमिश्नर ने सभा के लिए स्वीकृति दे दी परन्तु जुलूस स्थगित कर दिया। हम अपनी ओर से एक भी शब्द कहना नहीं चाहते थे परन्तु पुलिस अपने उच्च अधिकारियों के निर्देश से समय–समय पर गिरगिट की तरह रंग बदलती रही। जब हमारे हाथों में सत्ता होगी हम भी पुलिस को इस तरह के निर्देश देंगे। पुलिस की मजबूरी को ध्यान में रखते हुये हमने अपना कार्यक्रम पुनः आरम्भ करने का निर्णय लिया। इसी बात को ध्यान में रखते हुये हमने अपने कार्यकर्ताओं को भीड़ कम से कम प्रतिबन्धित करने का निर्देश दिया।

धिक्कार पहले ही हो गया

कांशीराम जी ने बताया कि हालांकि इस अवसर पर कहने को बहुत कुछ है। मैं अधिक समय नहीं लेना चाहता। हम जो कहना चाहते हैं, वह तो पहले ही हो चुका, हमें जो कहना था, वह नगर में लगाये गये 10 हजार पोस्टर बताते हैं। एक लाख से अधिक पर्चे जो पूरे शहर में बाँटे गये थे सब बताते हैं कि हमें क्या कहना है। हमारे जागृति जत्थे ने 300 बस्तियों में घूम–घूम कर पहले ही बता दिया कि हमें क्या कहना है। अब मेरे लिये इस सम्बन्ध में अधिक बोलने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु हमें कुछ करने की जरूरत है। इसके लिए हमें अपने आप को तैयार करना है।

हालांकि हम कमिश्नर को सहमत कर सके थे अपने अधीनस्थ अधिकारियों को असहाय छोड़कर उसे तुरन्त ही बम्बई बुला लिया गया है। मैं बम्बई में उनके भाग्य और मजबूरी को समझता हूँ, जिन्हें कि वे अपने पीछे असहाय छोड़ गये थे, और हमें देखना है कि वे हमारे कार्यक्रमों के प्रति कैसा उत्तरदायित्व निभाते हैं। स्थानीय प्रेस के रवैये की आलोचना करते हुये आपने कहा कि हालांकि भारतीय प्रेस ब्राह्मण–बनिया प्रेस है लेकिन यहाँ पूना में पेशवा, ब्राह्मण द्वारा चलाई जाने वाली प्रेस है। इसीलिए वे प्रतिबन्ध आदेश को प्रकाशित करने के लिए दौड़े, वे महाराष्ट्र की ब्राह्मण, बनिया सरकार से गठबंध किये हुये है।

पूना पैक्ट के बुरे प्रभावों के बारे में बोलते हुए आपने कहा कि जिनके हाथों में देश का सारा कारोबार है उन्होंने हमारे में से ही कुछ चमचे तैयार किये हैं और उनके माध्यम से वे दलित–शोषित समाज के आन्दोलन को हानि पहुँचाते हैं। आपने यह भी कहा कि यह केवल शक्ति है जो कि हर किसी को सहमत कर लेती है और अब इस तरह की शक्ति हमारे हाथों में बहुत ही कम समय में आने वाली है। हम यहाँ न तो महात्मा गाँधी का धिक्कार करने के लिए इकठ्ठा हुये हैं और न ही भावनाओं में बहकर बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के नाम का ढोल पीटने आए हैं। बल्कि सोच समझकर योजना बनाकर और दलित शोषित समाज के कारवाँ को आगे बढ़ाने के लिए आये हैं जिसे कि आज से 25 वर्ष पूर्व बाबा साहब छोड़ गये थे। हम किसी से भी टकराना नहीं चाहते हैं लेकिन यदि हमें बाध्य किया गया तो दलित–शोषितों को शत्रु को करारा धक्का देने के लिए तैयार रहना चाहिए। अंत में आपने कहा कि साधारणतः शब्दों से कुछ भी नहीं होगा। हमें अपने आपको तैयार करना चाहिए और हमारी तैयारी हमारे दुश्मन के लिए चेतावनी होनी चाहिए।

पुलिस के दलालों द्वारा गड़बड़ी करने के तत्काल बाद ही मा. कांशीराम जी ने माईक पकड़ा और अपने साथियों से शान्ति बनाये रखने की सलाह दी परन्तु साथ ही साथ उन्होंने पुलिस को आड़े हाथों लिया। आपने कहा कि मैं दो दिन से देख रहा हूँ कि पुलिस हमारे समारोह को तहस–नहस करने के लिए कोशिश कर रही है। परन्तु जब वे असफल रहे, तो उन्होंने पेंथर भेजे। आपने कहा कि मैं सब पेंथर्स को अच्छी तरह से जानता हूँ। मैं उनके उदय और गिरावट का साक्षी हूँ। जब वे भूखे होते थे तब मैं उन्हें खाना खिलाता था, उन्हें जब आवश्यकता होती थी, उनकी मदद की परन्तु वे सब भूल गये। आपने बताया कि कैसे ये पेंथर्स एस.एम. जोशी, एन.जी.गोरे, एस.ए. डांगे और सम्भाजी काकड़े के हाथों में चमचे बने हुये हैं। आपने बताया कि किस तरह से आरम्भ में आर.पी.आई. के नेताओं की बामसेफ द्वारा मदद की गयी और जब उन्होंने चमचागिरी शुरू कर दी तो हाथ छोड़ दिया। मा. कांशीराम जी ने पुलिस और शत्रु को चेतावनी दी कि दलित–शोषित समाज हर तरह की चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयार है। हम लोकतंत्र में विश्वास रखते हैं। उसी लोकतंत्र को बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने माना था और हम उनके अनुयायी होने के नाते और लोकतांत्रिक ढंग से हम तीन वर्ष के अन्दर सत्ता अपने हाथों में ले लेंगे। यदि हमारा दुश्मन लोकतंत्र में विश्वास नहीं रखता, हम उससे हर तरह से मुकाबले के लिए तैयार है। चाहे वह अधिनायकवाद हो, मिल्ट्री शासन हो या अराजकता हो तीन साल के अन्दर हम दुश्मन की चुनौती स्वीकार करने के लिए सक्षम होंगे। हमने ब्राह्मणवाद और पेशवावाद को हमेशा के लिए समाप्त करने का निश्चय किया है।

सम्मेलन को राजनाथ सोनकर शास्त्री (सांसद), रामलाल कुरील (पूर्व सांसद), दत्ता राक्षे (अध्यक्ष महाराष्ट्र राज्य धोबी महासभा), एस.आर, बौद्ध (अध्यक्ष, आर.पी.आई. हरियाणा), मास्टर मानसिंह (आगरा), फादर पीटर लूईस (नासिक), हाजी अब्दुल करीम पारेख (नागपुर), अनन्त राव फूले (महात्मा जोतिराव फूले का प्रपौत्र), सुखदेव राव तिड़के (विदर्भ) तथा कु. मायावती ने भी सम्बोधित किया।

साभार :
मा. कांशीराम साहब के ऐतिहासिक भाषण
पेज संख्या 71 से 74 तक
ए. आर. अकेला

वेद आदि शास्त्रों में धर्म परिवर्तन

कहते हैं कमजोर की बहुरिया गांव भर की सलहज। यहां गांव भर की सलहज का अभिप्राय है साले की औरत। इस नाते जो चाहता है दो गाली दे देता है। अर्थात सलहज को गाली देने का सबका अधिकार है। पर यहां तो दलित समाज, मूल भारतीय समाज, हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध सबकी सलहज है। सलहज ही नहीं बल्कि सबकी रखैल है, जो चाहता है, अपने यहां रख लेता है, अपना लेता है रोटी, कपड़ा, मान–सम्मान, अधिकार का लालच देकर या अपनी दबंगई के बल पर, लाठी मारकर। यह आज की प्रवृत्ति नहीं, बल्कि सदियों पुरानी रीति है। यह कमी केवल मूल भारतीय दलितों की है। क्योंकि इनकी दृष्टि में कमी है, ये अपनी भाषा, संस्कृति, इतिहास, धर्म एवं अधिकार को कुछ समझते ही नहीं हैं। अंबेडकर तथा मार्क्स के चस्पे ने थोड़ी–सी दृष्टि प्रदान की है, पर अभी भी ऐतिहासिक तथा अपनत्व की दृष्टि बिल्कुल बंद है। आधुनिक काल में डॉ. अंबेडकर ने ज्ञान का रास्ता तो खोला पर ऐतिहासिक रास्ता नहीं खोल पाया। डॉ. अंबेडकर यह बताने में असमर्थ रहे कि मूल भारतीयों का ऐतिहासिक अस्तित्व क्या है? उन्हें खुद पता नहीं था वरना बौद्ध धर्म नहीं अपनाते। बल्कि स्वयं खुद का धर्म बनाते, कोई भी धर्म का नाम दे देते वही धर्म हो जाता। दलितों को दर–दर भटकना नहीं पड़ता। दलितों की भी संस्कृति है, भाषा, मिथक, देवी–देवता एवं अस्तित्व है, किसी का मोहताज नहीं।

मध्य एशिया से आए आर्यों ने जब भारत पर आक्रमण किए तो उनकी संख्या 50, 100, 150 फिर 500 तक हो गई और आज आर्यों की संख्या 15 करोड़ है। क्यों? क्योंकि वेदों के प्रत्येक मंत्र में शुद्धिकरण अर्थात धर्मपरिवर्तन अधिकाधिक है। वेदों में यज्ञ–महायज्ञादि कर्मकांड का विधान, उपासना कांड का विधान पाया जाना ही शुद्धि है। गोविंद प्रसाद शास्त्री नें 'सनातन शुद्धि शास्त्र' में लिखा है कि मनुष्यों में दो प्रकार के मनुष्य सदास से हैं। आर्य और अनार्य। भगवान वेद की यह आज्ञा है कि अनार्य अर्थात कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, स्वार्थपरायण पुरूषों के अंदर से तमोगुणजन्य काम, क्रोध, लोभादि आसुरी वृत्तियों का नाश करके उनके अंदर शम, दम, तितिक्षा, धैर्य विद्या आदि दैवी भावों का उदय करते हुए आर्य बनाना, जिससे समस्त संसार के मनुष्यों को धर्म (हिंदू धर्म) मार्ग पर चलते हुए इहलोक एवं परलोक में सुख प्राप्त हो सके। यही अनार्यों की शुद्धि है।

हिंदू धर्म परिवर्तन की आवश्यकता क्यों? शास्त्री लिखता है कि ढाई हजार वर्ष के अंदर 1 अरब 85 करोड़ हिंदुओं में से आज मात्र 21 करोड़ हिंदू ही रह गए हैं। हिंदुओं को हड़पने के लिए एक तरफ ईसाई मुंह फाड़े बैठे हैं तो दूसरी ओर मुसलमान जाए फैलाए हैं। अमेरिका तथा इंग्लैंड दोनों हिंदुओं की ओर ललचाई दृष्टि से देख रहे हैं। वेदों में तमाम स्थलों पर आपको मिल जाएगा जहां साफ–साफ कहा गया है कि भारत के मूल निवासियों, अंत्यजों, अनार्यों, दस्युओं, शूद्रों (दलितों) का धर्मांतरण कर हिंदू गुलाम बनाओ, देखिए–

इन्द्रं वर्धन्तोप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम।
अपघ्न अंतोऽ रावणः।।

(ऋग्वेद–मंडल–9 सूक्त–63 मंत्र–5)

अर्थ : हे आर्य वीरों (अप्तुरः) उत्साह और धैर्यतापूर्वक (इंद्रम्) अपने ऐश्वर्य तथा ईश्वर और ईश्वरीय नियमों को बढ़ाते हुए (अरावणः) अपना स्वत्व अपरहण करने वाले अनार्यों (शूद्रों) को (अपघ्नन्तः) मारते हुए (विश्वम्) विश्व के समस्त अनार्यों को आर्य (कृण्वन्तः) बनाओ (यानी तलवार के बल पर धर्म परिवर्तन)।

समीक्षा : ब्रह्मा ने देखा कि उसके पास शक्ति है, वह शक्ति है– साम, दाम, दंड, भेद, कुनीति और छल–कपट की तो उसका पूरा–पूरा फायदा उठाया और संख्या वृद्धि हेतु एक नियोग (अयोनिज संतानोत्पत्ति), दूसरा धर्मपरिवर्तन, धर्म, देवी–देवता, स्वर्ग, नर्क तथा सुख–समृद्धि का लालच देकर। यही कारण है कि आज उसकी संख्या 150 करोड़ हिंदू हो गए हैं। इसमें प्रथम चालाकी यह की गई कि जो कर्म का विभाजन किया गया वह प्रभुजन ब्राह्मणों को केवल अध्ययन–अध्यापन और उपदेश देकर दो दुना पांच पढ़ाकर माल खाना हथिया लिया। एक को स्वर्ग की अप्सराओं का लालच देकर वीर क्षत्रीय घोषित कर दिया। दूसरे से वाणिज्य, कृषि, कर्म करवाया तथा तीसरे वर्ण (मूल भारतीय) के नीच बना दिया और कर्म दिया द्विज सेवा। वह भी जूठन, फाटन और लातन के बदले में।

महाभारत के युद्धकाल के पश्चात ब्राह्मण संगठन बहुत ही मजबूत रहा। तीनों वर्ण इसकी आज्ञा को शिरोधार्य कर चलते थे। राजाओं की तलवार और वाणों के समूह में वह सामर्थ्य नहीं थी, जो ब्राह्मण की वाणी में थी। वेद से थोड़ा अलग हटकर भागवत ने शूद्र की अलग ही पहचान दी है–

शूद्रस्य संनतिः शौचं सेवा स्वामिन्यमायया।
अमन्त्रयज्ञो हयस्तेयं सत्यं गोविप्रक्षणम्।।

अर्थ : जहां मनु ने बिना ईर्ष्याभाव के तीनों वर्णों की सेवा बताई है। वहीं भागवत में कहा है कि–1. नम्रता 2. स्नानादि द्वारा शुद्धता 3. निष्कपट भाव से स्वामी की सेवा 4. अमंत्रक यज्ञ 5. चोरी न करता 6. सत्यभाषी 7. गौ तथा ब्राह्मण रक्षक होना चाहिए। साथ ही शूद्र को अपने आप को हिंदू समझना चाहिए। द्विज से दूर रहने की सोचना भी नहीं चाहिए।

समीक्षा : मूल भारतीय जो कि हिंदू (अनार्य) हैं। उन्हें प्रताड़ित कर हिंदू बनाओ, क्योंकि वे ऐसे हिंदू नहीं बनने वाले। हुआ भी यही है कि आज करोड़ों शूद्र हिंदू कहे जाते हैं, केवल प्रताड़ना के डर से। कहीं उन्हें डर है, देवी–देवता तथा ब्राह्मण के कोप से तथा कहीं उनकी प्रताड़ना से।

आ संयतमिद्रणः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय वृहतीममृध्राम।

यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन सुतुका नाहुषणि।।

(ऋग्वेद–मंडल–6 सूक्त–22 मंत्र–10)

अर्थ : हे ईश्वर! प्रजापति ब्रह्मा! हमें संयत, रहमदिल बनाओ, अक्रोध की शक्ति प्रदान करो जिससे कि हम विशाल, शक्ति संपन्न अनार्यों (शूद्रों) को आर्य बना सकें।

समीक्षा : इस मंत्र में ब्रह्मा से प्रार्थना की गई है कि आर्य जो कठोर तथा अति हिंसक, बधिक हैं, उन्हें रहम दिल बनाओ ताकि वे चिकनी–चुपड़ी बातें कर, मूर्ख बनाकर भारत के मूल निवासियों को हिंदू अर्थात शूद्र (हिंदू गुलाम) बना सकें। वर्ना कठोर बनने पर ये विशाल वज्र भुजाधारी मूल भारतीय आर्यों को मार ही डालेंगे।

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चकुषं देवा–देवा जीवयथा पुनः।।

(ऋग्वेद–मंडल–10 सूक्त–137 मंत्र संख्या–1)

अर्थ : हे देवा! आर्य पुरूषों! तुम लोग (अवहित) अधोगत पतित व्यक्तियों मूल भारतीय (शूद्रों) को (उत) निश्चय ही (पुनः) फिर से (उन्नयथा) उन्नत करो (हे देवाः) विद्वान पुरूषों को अवश्य ही दुबारा (जीवयथाः) शुद्ध करो।

समीक्षा : इस मंत्र में भी यही कहा गया है कि मूल भारतीयों, जो अपवित्र हैं, उन्हें शुद्ध करो अर्थात मूल भारतीय शूद्र से आर्य (दास–गुलाम) बनाओ। वेद आर्यों के अतिरिक्त समस्त जीव को अशुद्ध मानता है।

विजानीहर्यान् ये च दस्यवा बर्हिष्मते।
रन्धया शास्त्रदब्रतान शाकी भव यजमानस्य
चेदिता विश्वेत्ता ते सधामादेषु चाकन।।

(ऋग्वेद–मंडल–1, अनु–10, सूक्त–51, मंत्र–8)

अर्थ : हे आर्य! तू उत्तम सुखादि गुणों के उत्पन्न करने वाले व्यवहार की सिद्धि के लिए दयादि गुणयुक्त परोपकारी, लोभी, हिंसक, परपीड़क (मूल भारतीय) विधर्मी हिंदू धर्म न मानने वाले शूद्रों अर्थात वेदादि आज्ञा विरोधी अनार्यों को अपने हिंदू धर्म की सिद्धि के लिए शुद्ध कर आर्य बना और उन्हें पूजापाठ (कथाभागवत) कर्मकांड में लगा। यह मेरी (ब्रह्मा की) आज्ञा है।

समीक्षा : आर्यों के मुखिया ब्रह्मा को सबसे पहले यहीं चिंता थी कि उनकी संख्या कैसे बढ़े? इसके लिए उसने सारे आर्यों, आर्य पुरोहितों को आदेश दिया कि मूल भारतीयों को आर्य (गुलाम शूद्र) बनाओ। उनको गुलाम बनाना आसान नहीं है क्योंकि उनकी विशेषता है– 1. उदारता 2. परोपकारी 3. परिश्रमी 4. मूल भारतीय संस्कृति निष्ठावादी 5. स्वाभिमानी तथा 6. वेद विरोधी। इसका अर्थ यह है कि मूल भारतीय ऐसे भुलावे में नहीं आने वाले। उनके साथ उदार बनो। घड़ियाली आंसू [illegible] उदारता का दांत निपोरकर मूल भारतीयों को मूर्ख बना दिया आर्यों में धर्म परिवर्तन कर।

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातिवेदः पुनीति मा।।
पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीधत,
अग्ने क्रत्वा क्रतूंऽरनु।
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने वितत मन्तरा,
ब्रह्म तेन पुनातु मा।।

(य. अ.–19 मं. 39–40–41)

अर्थ : हे देव (जनाः) विद्वान पुरूषों अनार्यों को (धर्म परिवर्तन द्वारा) पवित्र करो, मन से बुद्धियों को पवित्र करो (बिस्वा भूतानि)। समस्त मनुष्यों (विशेष रूप से मूल भारतीयों को) को पवित्र करो। (पुनन्तु) पुनः पुनः शुद्ध करो।

हे (दीप्यत देव) प्रकाश रूप अग्नि स्वरूप विद्वानों! आप (पवित्रेण शुक्रेण) फिर पवित्र करो और (मूल भारतीयों के पूर्व कर्मों को) फिर पवित्र करो, मेरे कर्मों को शुद्ध करो।

हे अग्ने! प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! (ते) (अर्चिषि) पूजा करने योग्य शुद्ध स्वरूप में सबसे भिन्न जो विस्तृत शुद्ध स्वरूप वेद ज्ञान है उससे मुझे तथा अनार्यों को धर्म परिवर्तन द्वारा शुद्ध करो।

समीक्षा : इस अंग में ब्रह्मा द्वारा यह निर्देश दिया गया है कि हे विद्वान पुरूषों (पुरोहित)! अनार्यों को शुद्ध करो अर्थात उन्हें नहला–धुलाकर मंत्र द्वारा गुलाम (शूद्र) बना लो। मन से बुद्धियों अर्थात अनार्यों के नेतृत्व को लोभ–लालच देकर पवित्र करो अर्थात उनका धर्म परिवर्तन करो। लेखक आगे बताता है कि फिर से पवित्र करो। इससे आभास होता है कि जो शूद्र लोभ–लालच में पहले आर्य तो बन गए पर पुनः अपने मूल भारतीय धर्म को अपना लिया, उनके शास्त्रकार आदेश देता है कि उन्हें पुनः आर्य बनाओ। चाहे उन्हे लोभ–लालच दो या प्रताड़ित करो। आर्य बनाओ।

शास्त्रकार आगे लिखता है कि शुद्ध स्वरूप जो वेद ज्ञान है, उससे मुझे (आर्यों) तथा अनार्यों को शुद्ध करो। अर्थात आर्यों को वेद ज्ञान तथा अनार्यों को वेद व्यवस्था के बंधन में बांध लो।

येषां प्रपितामहादिभिरूपनयनं न स्मर्यते तत्रार्थामपि रूषाणामनुपनीतत्वं ते सर्वे श्मशान वद शुचयः।
तेष्वागतेष्वभ्युत्थानं च वर्जयेत् आपद्यापि न कुर्यादित्यर्थः
तेषां स्वयमेव शुद्धिमिच्छातां प्रायश्चित्तानन्तरमुपनथनम्।।

(अवतरण–आपस्तंब–सूत्र)

अर्थ : जिनके प्रपितामह आदि के उपनयन का स्मरण नहीं रहा अर्थात जिनका प्रपितामह आदि पर यज्ञोपवीत था या नहीं इसका स्मरण तक न रहा हो और उन पुरूषों को भी अनुपनीत्व हो यानी उन पुरूषों पर भी यज्ञोपवीत न हो तो वे सब श्मशान के समान अशुद्ध हैं। उनके आने पर खड़ा होना आदि सत्कार त्याग दें। आपत्ति में भी उनका सत्कार न करें। यदि वे स्वयं अपनी इच्छा से शुद्ध होना चाहें तो उन्हें शुद्ध करें।

समीक्षा : उपरोक्त कथन का आशय यह है कि बहुत से ऐसे अनार्य हैं जो आर्य होने की स्थिति में सम्मान के योग्य नहीं हैं, पर यदि वे स्वेच्छा से आर्यत्व स्वीकार करना चाहें तो उन्हें आर्य बना लेना चाहिए। यही नहीं प्रताड़ित कर आर्य बनाए गए शूद्रों से स्वेच्छा से आर्य बनने वाले अनार्य को श्रेष्ठ (सछूत) बनाया जाए। भारतीय जाति विभाजन में आज दो वर्ग हैं– एक अछूत, जो आर्य देहरी में प्रवेश नहीं कर सकता और दूसरा है सछूत जो आर्य देहरी में प्रवेश कर सकता है।

वैदिक शास्त्रों में शुद्धि का अर्थ है प्रायश्चित और शुद्धि जिस व्यक्ति की जाती है उसे आर्य समूह में शामिल कर लिया जाता है। **'प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते। तपो निश्चय संयुक्त प्रायश्चितमिति स्मृतम्'** अर्थात जो चित्त से पापी तथा मूर्ख हैं, उनको वैदिक विधि द्वारा शुद्ध कर अपनाया जा सकता है। वैदिक धर्म शास्त्रों में 7 प्रकार पातक बताए गए हैं– 1. महापातक 2. अतिपातक 3. अनुपातक 4. अनार्यपातक 5. शूद्र (मूल भारतीय पातक) 6. उपपातक (दास पातक) 7. प्रकीर्ण पातक (कुकर्मी आर्य बहिष्कृत

पातक)

ये सात प्रकार के जो महापातक हैं, इनमें कुछ तो जन्मजात पातक हैं तथा कुछ बने और बनाए गए हैं। इन्हें वैदिक विधि द्वारा आर्य (दास–गुलाम) बनाया जा सकता है। मनु ने भी पातकों को गिनाया है। पर विज्ञानेश्वर के मिताक्षरा से भिन्न देखिए –

ब्रह्महत्या, सुरापान, स्तेयं गुर्वगनागमः।
महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह।।
(मनु–11–54)

अर्थात महापातक वह है जो ब्राह्मण की हत्या करे, शराब पिए, चोरी करे तथा गुरू की स्त्री से व्यभिचार करे। इसमें अनार्य तथा मूल भारतीय केवल प्रथम विशेषता में आते हैं और वह है ब्राह्मण की हत्या। जैसे कनिष्क ने हजारों ब्राह्मणों की हत्या की और कराई थी। बाकी चारों विशेषताएं तो केवल ब्राह्मणों में ही पाई जाती हैं। जैसे चोरी करना, शराब पीना, ब्रह्म हत्या तथा गुरूमाता से व्यभिचार। फिर भी इनकी शुद्धि कर पुनः आर्य बना लिया जाता है। यही कारण है कि आज आर्यों की संख्या बराबर बढ़ती जा रही है।

मनुस्मृति–11–83–84 में कहा गया है कि ब्राह्मण धर्म का मूल है और राजा अग्रभाग है। इस कारण उनके समागम में पाप का निवेदन करके शुद्ध होता है। उन ब्रह्महत्यादि करने वाले (अनार्यों) को वेदज्ञ प्रायश्चित कराकर शुद्ध करें तथा आर्य बना लें। क्योंकि ब्राह्मण विद्वानों की वाणी पवित्र होती है।

अंगीकारणे ज्ञातीनां ब्राह्मणानुग्रहेण च।
पूयन्ते तत्र पापिष्ठा महापातकिनोपि ये।।
(अत्रिस्मृति–274)

अर्थ : द्विज (आर्य) लोग अपने में मिलाने को तैयार हो और ब्राह्मणों को दया हो जाए तो महापातकी (अनार्यों) को भी आर्य (शूद्र) बना लें। इसमें यह जरूरी कि ब्राह्मण वर्ग चाहता है कि नहीं। अत्रि वेद रचयिता। मतलब उस काल में शूद्रों की संख्या भारी हो गई थी।

आपत्काले तु सम्प्राप्ते शौचाचारं न चिन्तयेत्।
शुद्धि समुद्धरेत् पश्चात स्वश्यो धर्म समाचरेत्।।
(पराशम स्मृति कथन)

अर्थ : आपत्ति काल में यदि आर्यों की संख्या घट रही हो तो बिना शौचाशौच का विचार किए ही किसी को भी आर्य बना लेना चाहिए। पीछे शांति स्थापित होने पर धीरे–धीरे वैदिक धर्म का आचरण कराना चाहिए। क्योंकि कोई भी मूल भारतीय आदिवासी, मुसलमान या ईसाई तत्काल वैदिक कर्मकांड नहीं कर सकता। सो उन्हें मानसिक मेकप का पूरा समय दिया जाना चाहिए।

गोविंद प्रसाद शास्त्री सनातन शुद्धि में कहता है कि इस समय हिंदू जाति पर आपत्ति है, इसलिए पराशर स्मृति में इस नीति के वचनानुसार धर्मपरिवर्तन करने वाले प्रत्येक ब्राह्मण का काम करना चाहिए। जहां शुद्धि (परावर्तन) की कोई बाधा दिखे, बस वहीं कान में 'ओम' या 'राम' कहकर उसे आर्य (हिंदू) बना लें। फिर बाद में विधि कर लेनी चाहिए।

जिस समय पंजाब में जम्मू कश्मीर आदि देशों पर मुसलमानों के बड़े–बड़े हमले हो रहे थे और मुसलमान हिंदुओं को तलवार के जोर से मुसलमान बना रहे थे, उस समय जम्मू–कश्मीर आदि अनेक राज्य देशों के अधिपति महाराजाधिराज रणवीर सिंह ने भारत के प्रमुख–प्रमुख ब्राह्मण–पुरोहित को बुलाकर हिंदुओं, दलितों को पुनः हिंदू बनाने के लिए सम्मति लेकर एक धर्मशास्त्र निबंधांतर्गत प्रायश्चित्ताध्याय नामक एक ग्रंथ तैयार कराया। पुरोहितों ने उस समय धर्मशास्त्रों में ब्राह्मणों को अधिकारों के आधार पर प्रायश्चित की जो व्यवस्था मुसलमानों को हिंदू धर्म में लेने के लिए दी, वह व्यवस्था धर्मशास्त्र के अंतर्गत पृ. 54 से 77 तक दी हुई है–विष्णु पुराण में गंगाजल से शुद्धि दी गई है। वृहन्नारदीय सूत्र में शुद्धि की व्यवस्था दी गई है। स्कंद पुराण–318, पद्म पुराण–खंड–2 अध्याय–91 में शुद्धि की व्यवस्था दी गई है। इसमें कुंजलक उवाच में कहा गया है कि जब इंद्र ने गुरू पत्नी संग संसर्ग किया तो वह अशुद्ध हो गया। ब्राह्मणों ने उसे त्याग दिया। तब उसने मालव देश में जाकर किन्नरों के हाथों स्नान किया। इस प्रकार व पापमुक्त हो गया। देवताओं ने फूल बरसाए। वह पुनः आर्य बन गया।

भविष्ण पुराण में एक कथा है कि त्रिपाठी नामक एक ब्राह्मण था। उसकी बेटी जवान थी। उसे अकेली छोड़ धनाढ्य वैश्यों के देवलक नाम ग्राम में सप्तशती का पाठ करने चला गया। एक मास से अधिक बीत गया पर ब्राह्मण त्रिपाठी घर नहीं आया। उसकी जवान बेटी काम से पीड़ित हो संभोग के लिए बावली हो नौजवान की तलाश करने लगी। त्रिपाठी कन्या का घर पहाड़ी तथा जंगली था। वहीं एक शूद्र चमार पुत्र था। वह बेहद सुंदर और तंदुरूस्त जवान था। उसे देख त्रिपाठी कन्या आसक्त हो गई। उसने निषाद से निवेदन किया कि उसके साथ संभोग करे। पर निषाद युवक बोला कि हम शूद किसी की इज्जत से खिलवाड़ नहीं करते। वह त्रिपाठी कन्या पैरों में पड़ गई। बहुत अनुनय–विनय की और पांच रूपए भी दिए। तब निषाद युवक ने उसके साथ संभोग किया। वह गर्भवती हो गई। एक पुत्र हुआ। अब निषाद युवक और त्रिपाठी कन्या साथ–साथ रहने लगे। तेरह वर्ष बी गए। दोनों का पुत्र बारह वर्ष का हो गया। तब त्रिपाठी आया। बेटी को न पाकर दुखी हुआ और विंध्याचल गुफा में चला गया। वहीं तप–सप्तसती पाठ करते हुए मर गया। एक दिन निषाद उसी विंध्य पर्वत पर गया तथा एक ब्राह्मण से आदिकथा सुनी। उसने अपना सब धन उस ब्राह्मण को दे दिया। निषाद का सारा पाप धुल गया। वह आर्य बन गया। फिर बाद में वही निषाद विद्वान ब्राह्मण पुरोहित बन गया और श्रेष्ठ विद्या को प्राप्त कर महाराज विक्रमादित्य के यज्ञ में एक प्रमुख यज्ञाचार्य हुआ। भविष्य पुराण का यह कोरा गल्प मूल भारतीयों को बुद्धू बनाकर हिंदू बनाने की चाल है। क्योंकि आज ऐसा एक भी शूद्र (चमार) नहीं मिलता है जिसे किसी ब्राह्मण ने किसी मठ का जगतगुरू चमार बनाया हो।

भविष्य पुराण में लिखा है कि कण्व ऋषि सरस्वती की आज्ञा से मिश्र में गए और दस हजार म्लेच्छों को शुद्ध तथा वशीभूत कर अत्युत्तम ब्रह्मावर्त देश में लाए और वे सब म्लेच्छ तप द्वारा सरस्वती देवी की स्तुति करने लगे। पांच वर्ष तप करने पर देवी सरस्वती प्रकट हुई तथा प्रसन्न होकर म्लेच्छों को शूद्र वर्ण प्रदान किया और वे सब शूद्र कला–कौशल की वृत्ति व्यवहार से जीवन निर्वाह करने लगे और बहुत सी संतान वाले हुए। तब उनके मध्य में दो हजार वैश्य हो गए।

यह भी एक गप्प ही है। तिस पर भी यह कि मुसलमानों को हिंदू तो बनाया पर ब्राह्मण नहीं दास और गुलाम शूद्र। जिनका जीवन नर्क से भी बदतर जीवन व्यतीत करने पर मजबूर है सदियों–सदियों से।

गोविंद प्रसाद शास्त्री ने –'सनातन शुद्धि शास्त्र' और 'आर्यों का चक्रवर्ती राज्य' में लिखा है कि जब बौद्धों ने आर्य जाति और वर्णाश्रम धर्म का नाश के लिए उद्योग किया तब करोड़ो आर्यों को बौद्ध धर्म ग्रहण करते देख, आर्य जाति का नाश होते देखकर स्वामी शंकराचार्य आदि महात्मा तथा उनके समर्थ राजा–महाराजों ने करोड़ों बौद्धों को मार कर भगाया और उनके बौद्ध हुए आर्यों को फिर से आर्य बना दिया।

भविष्य पुराण में यह कथा है कि अग्निवंशीय क्षत्रियों ने जबरदस्ती करोड़ो बौद्धों को कठोर यातना देकर आर्य बनाया तथा जो आर्य नहीं बने उन करोड़ों शूद्रों को मौत के घाट उतार दिया। कथा है कि कलि ने पृथ्वी पर मय नामक राक्षस भेजा जो शाक्य सिंह (बुद्ध) का गुरू था–

स नाम्ना गोतमाचार्यो दैत्य पक्ष विवर्द्धकः
सर्वतीर्थेषु तेनैव यन्त्राणि स्थापितानि वै।।33।।
तेषां मध्ये गता ये तु बौद्धाश्वासन समन्ततः
शिखा सूत्र विहीनाश्च बभूवुर्ववर्णसंकराः
दश कोटयः समृतास्त्र बभूवुबौर्द्ध पन्थिनः।।34।।
पंच लक्षास्तदा शेषाः प्रयुयुर्गिरिमूर्द्धनि।
चतुर्वेद प्रभावेण राजन्या वन्हिवंशजाः।।35।।
चत्वारिशं भवायोद्धास्तैश्च बौद्धज्ञः समुज्झिताः
आर्यस्तांस्ते तु संकृत्य विन्ध्यादि दक्षिणे कृतान्
तत्रैव स्थापयामासुर्वर्णरूपान् समन्ततः।।36।।

अर्थ : दैत्य पक्ष को बढ़ाने वाला वह मय नामक राक्षस गौतमाचार्य के नाम से प्रख्यात हुआ और उसने समस्त तीर्थों पर मठ (विहार) बनवाए। जो लोग उसके पास गए, वे सब बौद्ध हो गए। चारों ओर बौद्धमत फैल गया। समस्त मनुष्य–देवता–ब्राह्मण, आर्य मय के भय से अपनी शिखा–चोटी कटवाकर, जनेऊ तोड़कर, वर्णसंकर हो गए। इस प्रकार दस करोड़ आर्य बौद्ध बन गए। तब केवल 5 लाख आर्य ही शेष रह गए। ये सभी मारे डर के आबू पहाड़ की गुफा में छिप गए। तब अग्निवंश के क्षत्रिय तथा क्षत्रिय राजाओं ने तलवार के बल पर बौद्धों को आर्य बनाया। जो बौद्ध आर्य बनने को तैयार नहीं हुए उन करोड़ों बौद्धों को क्षत्रियों ने अपनी तलवार से वैदिक धर्म की रक्षा के लिए काटा डाला। इस प्रकार अग्निवंश आर्य क्षत्रियों ने बौद्धों को वर्णाश्रम–धर्मी आर्य बनाकर वहीं बसाया।

मुसलमानों को हिंदू बनाया, मस्जिद गिरा मंदिर बनाया

भविष्य पुराण में लिखा है कि जिस प्रकार आर्य जाति के धर्मवीर महारथियों ने वर्णाश्रम धर्म तथा आर्य जाति का नाश करने वाले बौद्धों को शुद्ध कर फिर से शूद्र बनाया और जो आर्य नहीं बने उन्हें मारा–काटा। ठीक वैसे ही आर्य, आर्य जाति तथा सनातन धर्म की रक्षा के लिए कमर कस कर खड़े हो गए और ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने बौद्धों के समान लाखों मुसलमानों को मार–काट कर वैष्णव हिंदू बनाया तथा मस्जिदों को गिराकर मंदिरों को बनाया।

जब मुसलमानों ने जगन्नाथपुरी तथा अन्य स्थानों पर मस्जिदें बनवाईं तो आर्यों में भारी कोलाहल मन गया। तब कृष्ण चैतन्य के सेवक वैष्णव गुरु से दिव्य मंत्र तथा विद्या प्राप्त कर सातों पुरियों में फैल गए। **पं. रामानंद के शिष्यों ने अयोध्या के मुसलमानों को मार–काट कर वैष्णव हिंदू बनाया।**

रामानन्दस्य शिष्यों वै अयोध्यायामुपागतः
कृत्वा विलोमं तं यन्त्रं वैष्णवांस्तानकारयत्।।54।।
भाले त्रिशूल चिह्नश्च श्वेतरक्तं तदाभवत्
कण्ठे च तुलसीमाला जिह्वा राममयी कृता।।55।।
क्लेच्छास्ते वैष्णाश्चासन रामानन्दप्रभावतः।
आर्चाश्च वैष्णवाः मुख्या अयोध्यायां बभूविरे।।56।।

अर्थात पंडित रामानंद के शिष्य अयोध्या गए और वहां पर मुसलमानों के यंत्रों को तोड़–फोड़कर तथा उनके उपदेशों का खंडन कर उन सब म्लेच्छों को वैष्णव हिंदू बनाया। उनके माथे पर लाल रंग से युक्त त्रिशूलाकार चंदन का चिह्न किया। जबरन कंठ में तुलसी की माला पहनाई। जिव्हा पर राम मंत्र का उपदेश लिखा। वे सभी मुसलमान रामानंद के प्रभाव से वैष्णव हिंदू बने और मुख्य आर्य वैष्णव अयोध्या में रहने लगे।

निम्बनादित्यो गतो धीमान् सशियः कांचिकापुरीम्
क्लेच्छ यन्त्रं राजमार्गे स्थितं तत्र ददर्श ह।।58।।
विलोमं स्वगुरोर्मनं कृत्वा तत्र सह चावसत्
वंश पत्र समा रेखा ललाटे कण्ठमालिका।।59।।
गोपी बल्लभमंत्र हि मुखे तेषां रराज सः
तदधो ये गता लोका वैष्णवाश्च बभूविरे।।60।।

अर्थात अपने शिष्यों के साथ विद्वान निंबकाचार्य कांचिकापुरी (कांची) को गया और राजमार्ग में मुस्लिमों की बनी हुई मस्जिदों को देखा, उसने अपने शिष्यों द्वारा प्रताड़ित कर मुसलमानों के मस्तक पर वंश पत्रा के समान चंदन की रेखा और कंठमाला धारण कराते हुए निंबादित्य ने म्लेच्छों के मुख में गोपी–कृष्ण–राधा मंत्र स्थापित कर दिया। जितने देश उसके (निंबकादित्य) के मार्ग में आए उन्होंने अपने शिष्यों के माध्यम से सारे मुसलमानों तथा मूल भारतीयों को वैष्णव हिंदू बना दिया।

विष्णु स्वामी हरिद्वारे जगाम स्वर्गणैर्वृतः
तत्र स्थितं महायन्त्रं विलोमं तच्चकार ह।।61।।
तद्धो ये गता आसन् जाताः सर्वे च वैष्णवाः
ऊर्ध्व पुण्ड्रं द्विरेखाभं तन्मध्ये विन्दूत्रयम।।62।।
ललाटे च स्थितस्तेषां कण्ठे तुलसीगोलकम्
मुखे साधवमंत्रश्च बभूव हितदायकः।।63।।

अर्थात विष्णु स्वामी अपने शिष्यों के साथ हरिद्वार में गया तथा वहां पर स्थित मुस्लिमों की मस्जिदों को उलट दिया (मंदिर बना दिया) तथा मुस्लिमों को जबरिया शुद्ध कर वैष्णव ब्राह्मण बना दिया और उनके माथे पर दो रेखाओं वाला ऊर्ध्व पुंड्र और उनके बीच में कृष्ण बनाकर कंठ में तुलसी माला तथा मुख में रामनाम लिख दिया।

मथुरायां समायांतो मध्यवाचार्यो हरिप्रियः
राजमार्गे स्थितं यंत्रं विलोमं तच्चकार हः।।64।।
तद्धदो ये गात लोका वैष्णवास्तस्य पक्षगाः
करवीर पत्रा सदृशं ललाटे तिलकं शुभम्।।65।।
स्थितं नासार्द्धभागान्ते कण्ठे तुलसी मालिका
राधाकृष्ण शुभं नाम मुखे तेषां बभूव ह।।66।।

अर्थात विष्णु भक्त माधवाचार्य मथुरा में आया तो राजमार्ग में म्लेच्छ यंत्र (मस्जिदों) को देखा और वहां से सारी मस्जिदों को उखाड़कर जड़ से मिटा दिया तथा मस्जिदों की नींव पर मंदिर खड़ा कर दिया। जो मथुरा के आस–पास अनार्य, मुस्लिम थे सबको मार–काट कर हिंदू बना दिया। इस प्रकार मथुरा के सारे वासी वैष्णव हिंदू हो

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

गए। माधवाचार्य ने उन सभी मूल भारतीयों तथा मुस्लिमों के मस्तक पर करवीर पत्र के समान आधी नासिका से लेकर सुंदर तिलक का चिन्ह और कंठ में तुलसी की माला और मुख में राधाकृष्ण का नाम खुदवा दिया। इस प्रकार मथुरा में जहां कभी बौद्धों का साम्राज्य हुआ करता था, बौद्ध प्रवचन एवं चैत्य ही चैत्य दृश्यमान हुआ करते थे। नामोनिशान मिट गया। मुसलमान जो कि बहुत बाद में आए अपनी जड़ जमाई मस्जिदों का निर्माण किया, उन सबको माधवाचार्य ने तीन मास में ही चकनाचूर कर दिया। चरण रज बना दिया।

तोतादर्याच सम्प्राप्तस्तदा रामानुजः सुखी
ऊर्ध्व रेखा द्वयोर्मध्ये सूक्ष्मरेखा च पीतिका।।69।।
ललाटे च तथा कण्ठे माला तुलसिका शुभा
मुखे राममंत्रश्च तेषां तत्र बभूव ह।।70।।

अर्थात आनंदमूर्ति रामानुज तोतादरी को गया और वहां सबको रामानुजी ब्राह्मण बनाया तथा अनार्यों, मुसलमानों के मस्तक पर दोनों भौंहो के बीच में ऊर्ध्व रेखा का चंदन और बीच में पीली चंदन रेखा, कंठ में तुलसी की माला और मुख में मुख में राममंत्र लिख दिया।

उज्जयिन्यां च सम्प्राप्तो वराहमिहिरो गुणी

तद्यत्रं निष्फलं कृत्वा नराŒछैवान चकार ह।।71।।
चिता भस्स स्थितं भाले कण्ठै रूद्रामालिका
शिवेति मंगलम नाम तेषां तत्र बभूव ह।।72।।

अर्थात गुणवान वराहमिहिर उज्जैन में गया और उन सब म्लेच्छों की मस्जिदों को उलट दिया तथा उनका नाश कर समस्त मनुष्यों (अनार्यों, शूद्रों तथा मुसलमानों) को शैव बना दिया और उनके माथे पर चिता की भस्म का चिन्ह, कंठ में रूद्राक्ष की माला तथा उनके मुख में शिव का नाम अंकित कर सबको ब्राह्मण (आर्य) बना दिया।

कान्यकुब्जे स्वयं प्राप्तो वाणीभूषण एव हि
अर्द्धचन्द्राकृतिं पुण्ड्रं रक्त चंदन मलिका
देव्याश्च निर्मलम् नाम तेषां तत्र बभूव ह।।73।।

अर्था वाणीभूषण स्वामी स्वयं कान्यकुब्ज देश में गए और मुसलमानों की मस्जिदों को ध्वस्त कराकर वहां मंदिर स्थापित कराया तथा उनके माथे पर अर्ध चंद्राकृति तिलक और रक्तचंदन की माला तथा मुख में श्रीदेवी जी का नाम नियत किया।

धन्वन्तरिः प्रयागे च गत्वा तद्यन्मुत्तमम्
विलोमं कृतवांस्तत्र तद्धो ये गता नराः।।74।।
अर्द्ध पुण्ड्रं स्मृतं रक्तं सबि०दु०च ललाटके
रक्तचंदनजा माला कण्ठे तेषा बभूव ह।।75।।

अर्थात वैद्य धन्वन्तरि जी ने प्रयाग में जाकर उन म्लेच्छों के यंत्र (मस्जिद) को ध्वस्त कराकर वहां मंदिर की स्थापना कराई और सभी अनार्यों, शूद्रों तथा मुसलमानों को शाक्त ब्राह्मण बनाया तथा उनके मस्तक पर लाल चंदन का मय बिंदु के अर्द्ध पुंड्र तथा कंठ में लाल चंदन की माला का चिन्ह अंकित किया।

भट्टो जी स गतो धीमान् उत्कलं रम्यमुत्तमम्।
त्रिपुण्ड्रं च तथा रक्तं कण्ठे रूद्राक्षमालिका।।
विश्वनाथेति तन्मंत्रं तेषां तत्र बभूव ह।
रोपणश्चेटिकां प्रास्तस्तद्यन्त्रं चैव निष्फलम्।।
कृत्वा जने–जने तत्र ब्रह्ममार्ग ददर्श ह।
जयदेव स्वयं प्राप्तो द्वारिकां विष्णुभक्तिमान्।।
तद्यन्त्रं निष्फलं यातं तदधो ये गता नराः।
रक्तरेखा स्थिता भाले चैकाकण्डे च मालिका।।
पद्माक्षो मन्त्रगोविन्दस्तत्र तेषा बभूव ह।
एवं ते वैष्णवाः शैवाः शाक्ताका बहुधाभवन्।।

अर्थात विद्वान पंडित भुट्टो उत्तम तथा मनोहर उत्कल देश को गया और वहां जाकर मुसलमानों तथा शूद्रों को शैव बनाया। मस्तक पर रक्त चंदन का त्रिपुंड्र, कंठ में रूद्राक्ष की माला तथा मुख में विश्वनाथ का नाम भर दिया।

रोपण चेटिका नामक नगरी में जाकर पंडित भट्टो ने मुस्लिमों की मस्जिदों को उलट–पुलट कर वहां मंदिर बनाया तथा सबको ब्रह्म मार्ग अपनाने को मजबूर किया। सबने असहायता के कारण ब्राह्मण धर्म अपनाया।

विष्णु के भक्त जयदेव ने द्वारिकापुरी में जाकर और उन म्लेच्छों (मुस्लिमों) के यंत्र (मस्जिदों) को नष्ट कर वहां मंदिर स्थापित किया तथा सारे मुसलमानों को शैव, शाक्त एवं वैष्णव ब्राह्मण बनाया तथा उनके माथे पर रक्त चंदन की रेखा कंठ में माला, पद्माक्ष और कृष्ण का मंत्र देकर सबको आर्य (शूद्र) बना दिया।

मुस्लिम शासन काल में महाराष्ट्र, पंजाब राजपूताना, संयुक्त प्रांत, बंगाल में यह धर्म परिवर्तन जोरों पर था। मि. किनकैड और पारसलैस लिखित 'मरहटा हिस्ट्री' में लिखा है कि जिस समय शिवाजी ने मूल भारतीय शूद्रों तथा मुसलमानों का दमन करके महाराष्ट्र के साम्राज्य का संगठन कर हिंदू राज्य की नींव डाली उसी समय राज्य का सुप्रबंध करने के लिए अष्ट प्रधान मंडल की स्थापना की, जिसका प्रमुख सचिव पंडित श्रीधरराव को बनाया। शिवाजी ने शास्त्रसम्मत धर्म की तीन शाखाएं बनाईं। 1. आचार विभाग 2. व्यवहार विभाग 3. प्रायश्चित विभाग। यही पंडित राव शूद्रों तथा मुस्लिमों को दंड दिलवाता, मस्जिद तथा बौद्ध तोड़वाता, वहां मंदिर स्थापित करवाता तथा सबको शूद्र बनाता।

बाजीराव पलटन का सरदार था। यह बीजापुर के बादशाह के दरबार में रहता था। यह मराठा ब्राह्मण था। बादशाह ने इस पर आरोप लगाकर यह कहा कि मुसलमान बन जाओ वर्ना तुम्हें फांसी पर लटका दिया जाएगा। मुसलमान बन जाओगे तो फांसी माफ और बादशाह की लड़की से विवाह भी कर दिया जाएगा। इस शर्त पर बाजीराव मुसलमान बन गया तथा बादशाह की लड़की से शादी कर जागीर लेकर मौज करने लगा। पर शिवाजी की हिम्मत न हुई। जब बादशाह मर गया तो शिवाजी ने पंडितराव से बाजीराव तथा उसकी मुस्लिम पत्नी दोनों को पुनः ब्राह्मण (आर्य) बना दिया। शिवाजी ने मृत्यु पर्यंत यही किया।

महाराष्ट्र के आंबेर राज्य में मिर्जा राजा राज्य करते थे। उन्हीं के शहर आंबेर में एक मराठा ब्राह्मण कवि था। दादू जो हिंदू धर्म प्रचारक था। इसने 52 मुसलमानों को वेद कर्मकांड पढ़ाकर ब्राह्मण (हिंदू) बनाया। उसी समय कवि रज्जव विवाह करने बारात लेकर जा रहा था। दादू ने ऐसा पढ़ाया कि रज्जब ने मुस्लिम लड़की से निकाह न करके हिंदू धर्म अपना लिया। मराठा ब्राह्मणी से विवाह किया तथा आजीवन हिंदू धर्म का प्रचार प्रसार दिया। मुस्लिमों द्वारा गाली खाता रहा।

जिस समय भारत वर्ष से सारे आर्यों का नामोनिशान मिट चुका था। वेदों, पुराणों, स्मृतियों तथा उपनिषदों का सूर्य गर्त में खो चुका था, ठीक उसी समय शंकराचार्य का उदय हुआ। 788 ई. में उसने कौपीन वस्त्र धारण कर, दंड कमंडल हाथ में ले, ब्राह्मणवाद की तलवार लेकर बौद्धों, मूल भारतीयों तथा शूद्रों का समूल नाश कर डाला। तलवार से टुकड़ा–टुकड़ा कर डाला। करोड़ों बौद्धों, मूल भारतीयों को हिंदू (गुलाम) बनाकर उनका जीवन नर्क बना डाला। शूद्रों ही नहीं मुसलमानों को भी शंकराचार्य ने आर्य बनाया।

शंकराचार्य एवापि शैवमार्ग परायणः
रामानुजाज्ञया प्राप्तः पुरीं काशीं गणैर्युतः।।67।।
कृत्वा विलोमं तद्यंत्रं शैवाश्च तद्धोभवन्
त्रिपुण्ड्रं स्थितं भाले कण्ठे रूद्राक्षमालिका
मुखे श्री शिव मंत्रश्च तेषां तत्र बभूव ह।।68।।

अर्थात गुरु रामानुज की आज्ञा से आदिशंकराचार्य जो शैव था काशी में जाकर मुसलमानों की सैकड़ों मस्जिदों को नष्ट कराकर सारे मुस्लिमों को जबरन शैव बनाया तथा उनके मस्तक पर त्रिपुंड्र का चिन्ह, कंठ में रूद्राक्ष की माला और मुख में शिव नाम अंकित कर दिया। यह शंकराचार्य हिटलर की तानाशाही रखता था। पोलपोट की तलवार तथा भेड़, भैंसा और बकरा काटने वाले बधिक का हिंसक दिल रखता था। शंकराचार्य जैसा विश्व में कोई दूसरा जातिवादी तथा शूद्रों का विनाशक नहीं था। सर्वप्रथम शंकराचार्य ने 8 अप्रैल, 812 ई. को काशी में ब्राह्मणों की एक धर्म सभा आयोजित की। जिसका प्रमुख प्रस्ताव था– 1. बौद्ध मूल भारतीयों का विनाश 2. बुद्ध विहारों का विनाश एवं उनकी नींव पर मंदिर निर्माण 3. मुस्लिम (म्लेच्छ) विनाश 4. मुस्लिम मस्जिदों का ध्वस्तीकरण ताकि उसी नींव पर मंदिर निर्माण 5. विश्व में आर्य प्रसार–आर्यों के वैश्वीकरण का एक नारा दिया था शंकराचार्य ने वसुधैव कुटुम्बकम्। शंकराचार्य ने मठों की स्थापना धर्मपरिवर्तनों का संचालन केंद्र बनाया। शंकराचार्य ने सर्वप्रथम यही किया। भारत के पांच विशालकाय बौद्ध विहारों को ध्वस्त कराकर पांच मठों की स्थापना की तथा उन्हीं पांच केंद्रों से आज तक उसी के बनाए पांच सिद्धांतों पर अमल होता आ रहा है यही कारण है कि भारत में आज शूद्रों की स्थिति बद से बदतर है। मूल भातरीय शूद्रों तथा बौद्धों के नारकीय जीवन का अपराधी केवल शंकराचार्य है। शंकराचार्य द्वारा बौद्ध विहारों पर स्थापित मंदिर निम्न प्रकार से हैं –

कांची कामकोटि पीठ

शंकराचार्य ने अपने को असुरक्षा की भावना से बचाने के लिए एकांत स्थान का चुनाव किया। कांची में कामाक्षी देवी की स्थापना की। यहां ब्राह्मणों का बाहुल्य है, वहीं अपना देवी के मंदिर में आवास बनाया तथा सारे भारत में धर्मपरिवर्तन की गतिविधियां चलाता रहा। वहां पर हजारों ब्राह्मणवादियों की सदैव भीड़ रहा करती थी। शंकर ने छहों मठों की स्थापना कर वहां–वहां अपने ही जैसा ब्राह्मणवादी मठाधीश नियुक्त किया। संचालन तो सबका शंकर के ही हाथ में था। पर जो जगह बैठता था, अन्य जगहों पर क्रमशः अनेकाचार्य बदलते रहे, जो शनैः शनैः जगतगुरू कहाते रहे (उदयवी शास्त्री–वेदांतदर्शन)। छहों धामों की स्थापना 26 वर्ष की अवस्था से अविराम छः वर्ष में की

2. श्रृंगेरी मठ

यह वह मठ है जहां पर शंकराचार्य ने 32 वर्ष जीवन व्यतीत किया। यह उसके संचालन का दूसरा प्रमुख स्थान था। यहां के आचार्यों की सूची निम्रवत है–

3. शारदा पीठ (द्वारका)

इस पीठ के अब तक 77 जगतगुरू आचार्य हुए हैं। इन्होंने भी वही किया है जो शंकराचार्य ने किया है, अर्थात अनार्यों, मूल भारतीयों तथा मुस्लिमों को दास एवं गुलाम बनाने का काम, जन शोषण का काम किया–

4. गोवर्धन पीठ

गोवर्धन पीठ की स्थापना शंकराचार्य ने अनाथपिंडक बौद्ध विहार को तुड़वाकर की थी। उसमें एक हजार दुर्दांत ब्राह्मण, क्षत्रीय इकट्ठे थे। शंकराचार्य ने शर्त रखी कि जो एक माह में एक हजार बौद्ध, शूद्र अथवा मुस्लिम मारेगा, हिंदू बनाएगा परम शिष्य एवं गोवर्धन मठ का मठाधीश बनेगा। कुल एक हजार ब्राह्मण क्षत्रियों में से 22 ने 351 से 1000 तक अनार्यों की हत्याएं की थीं, वे शंकराचार्य के परम शिष्य हुए तााि वही क्रम से पहले 22 अध्यक्ष मठाधीश बने। वहीं से एक, ग्यारह, इक्कीस और इक्यावन की शुरूआत हुई। बाईसवां व्यक्ति रामानंद था जो उत्तरी भारत में आकर अपने शैव, शाक्त, वैष्णव का प्रचार–प्रसार किया। गोवर्धन पीठ के अब तक कुल 144 जगत गुरू हुए हैं, जो क्रमशः निम्नांकित हैं।

5. ज्योतिर्मठ (बद्रीनाथ धाम) – ज्योतिर्मठ में भी शंकराचार्य ने छः वर्ष तक निवास किया था। निवास तो एक बहाना था। सारे देश में हिंदुत्व की लहर चलाने, अनार्यों को आर्य शूद्र बनाने का एक प्रमुख अड्डा बनाया था। बदरीनाथ बौद्ध विहार था। जिसके खंडहर का जीर्णोद्धार कर शंकराचार्य ने जिस पीठ की स्थापना की वही आज ज्योतिर्मठ बदरीधाम के नाम से जाना जाता है। 'गढ़वाल का इतिहास' नामक पुस्तक में लिखा है कि ज्योतिर्मठ का अधिकार ही बद्रीधाम का भी अधिकारी होता है। सन् 1947 ई. से इस मठ में महंतो की जो सूची प्राप्त है, द्रष्टव्य है–

धर्म परिवर्तन के संबंध में हिंदू कानून–व्यवस्था

1. सन् 1923 ई. में देश की विभिन्न हिंदू धार्मिक सभाओं ने धर्म परिवर्तन के लिए सभा का प्रस्ताव पास किया। इसमें 1. सनातन धर्म सभा 2. काशी पंडित सभा 3. कलकत्ता बंगाल ब्राह्मण सभा 4. सनातन धर्म सभा पंजाब 5. ब्राह्मण सभा संयुक्त प्रांत 6. तथा ब्रह्मवर्त सनातन धर्म सभा ने मिलकर तथा भारत महामंडल के संयुक्ताध्यक्ष स्वामी दयानंद (काशी), पं. गिरिधर शर्मा शास्त्री प्रधानाचार्य सनातन धर्म कॉलेज लाहौर, पं. रघुवर दयाल शास्त्री प्रिंसिपल सनातन कालेज, लाहौर ने एक विशाल धर्म सभा काशी में करके यह व्यवस्था दी कि –

बलात् छदमना वा क्लेच्छादिभिः स्वधर्मतः
प्रच्युतिं नीता आर्या आपस्तम्बोक्तं प्रायश्चितं
विधाय पुनरायर्येषु व्यवहार्या भवितुम अर्हन्ति।
भारत वर्षे सनातन धर्मावलम्बिन्यो
निम्न श्रेणिकाः कियत्य एव जाययः सन्ति
तासां काचिदपि व्यवस्था नानुपलभ्यते समाजस्य
अनुदारतथा विविधैर्विधर्मीभिर्बहु वारं कृतेप्य
अत्याचारे तादृशीषु जातिषु यदि पूर्व वंशानु
क्रमेगोपलश्यते सदाचार प्रमाणं तदा सा
व्यवस्थापनीया
उन्नति मार्गेषु तथा च यद्येताः पूर्ववंशानुक्रमेण
सदाचरिण्य उपलम्यन्ते तदा तासां जलग्रहणंमपि,
तत्तद्देशीयरीत्यनुसारतो भवितुम अर्हतीति।।

अर्थात भारत की जो नीच जातियां (मूल भारतीय शूद्र, दलित) हैं, जो सनातन धर्म को मानने वाली हैं। परंतु उनकी कोई समुचित व्यवस्था नहीं हो सकी है। समाज के

संकोच के कारण विविध विधर्मियों के अनेक अत्याचारों के बावजूद भी उनमें सदाचार पाया जाता है। उन्हें अवश्य ही शुद्धि कर हिंदू बनाया जाना चाहिए और ब्राह्मण समाज को चाहिए कि वे शूद्रों का जल ग्रहण भी करने में संकोच कदापि न करें। इससे ब्राह्मण हठधर्मिता छोड़ें।

2. काशी में भारत धर्म महामंडल का महाधिवेशन 6 से 9 जनवरी, 1927 ई. में हुआ। इसमें प्रस्ताव संख्या 8 में कहा गया है कि सनातन धर्म के सच्चे ज्ञान के अभाव में शिमला, आसाम, छोटा नागपुर तथा भारत के अन्यान्य प्रांतों के (अनार्य हिंदू) प्रायः अन्य अधिकारियों के भुलावे में जा जाते हैं और अपने हिंदू (हिंदू धर्म) का परित्याग कर देते हैं। इसलिए यह महाधिवेशन श्री महामंडल और खासकर प्रांतीय शाखा सभाओं धार्मिक संस्थाओं और धार्मिक नेताओं से अनुरोध करता है कि उन हिंदुओं (शूद्रों) में यथोचित धर्म प्रचार का नियमित प्रबंध किया जाए। उनके सुख–दुख में सहानुभूति के साथ उन्हें अधिक रूप से अपनाया जाए और अन्य धर्मों के भुलावे में आए अनार्यों को व्यवस्था समिति के सिद्धांतानुसार यथाशास्त्र व्यवस्था देकर सनातन धर्म की शरण में लाया जाए।

1. प्रस्तावक – विंध्येश्वरी प्रसाद शर्मा शास्त्री महोपदेशक

2. अनुमोदक – पं. ब्रह्मदत्त शर्मा शास्त्री

3. समर्थक – महोपदेशक तारामोहनशास्त्री

(यह प्रस्ताव 8 जनवरी, 1927 ई. को काशी के महासम्मेलन में सर्वसम्मति के पास हुआ)

3. 25 जुलाई, 1925 को कलकत्ता में बंगाल ब्राह्मण महासभा की बैठक हुई जिसमें चार प्रस्ताव पास किए गए, जिसमें यह निर्णय लिया गया कि जो शूद्र ईसाई या मुसलमान बन गया हो उसे पुनः आर्य बनाया जाए, केवल कलमं पाठो न दोषाय प्रभवति।

4. सर्वोदय– वर्ष 2 के अंक 6 में लिखा है कि बनारस में बंगाली टोला के गोपाल मंदिर में श्रावण कृष्ण एकादशी के दिन काशी के बड़े–बड़े विद्वानों की एक महासभा हुई। जिसमें महामहोपाध्याय पं. वामाचरण भट्टाचार्य महामहोपाध्याय पं. लक्ष्मण शास्त्री और पं. तर्करत्न पंचानन आदि ने यह प्रस्ताव पास किया कि 'जो हिंदू जबरदस्ती ईसाई या मुसलमान बनाए गए हैं उनको शास्त्रसम्मत पुनः आर्य बना दें।'

5. 22 अगस्त, 1923 ई. को गंगा किनारे काशी में एक महासभा हुई, जिसमें भारतभूषण पं. मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में देश के तमाम विद्वान, राजे–महाराजे सम्मिल्लित हुए, जिनमें प्रमुख थे जयपुर के पंडित गिरिधर शर्मा, काशी के जयदेव मिश्र, बंगाल के पं. सत्यचरण शास्त्री, गुजरात के महामहोपाध्याय पं. हाथी भाई शास्त्री, जयपुर के सूर्यनारायण शास्त्री, इंदौर के श्रीपाद शास्त्री, मद्रास के पं. कृष्णाचार्य शास्त्री आदि उपस्थित थे जिसमें सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि जो हिंदू शूद्र मुस्लिम अथवा ईसाई धर्म ग्रहण कर चुके हैं, चाहे वे राजपूत, ब्राह्मण, वैश्य, जाट, गूजर व अन्य किसी जाति के हों, उन्हें अपनी बिरादरी (आर्य) में मिला लेना चाहिए।

6. महाराष्ट्र हिंदू परिषद 17 फरवरी, 1923 को यवतमाल में हुई। करवीर मठ के जगतपुरु शंकराचार्य की अध्यक्षता में परिषद ने शुद्धि विषयक इस प्रकार व्यवस्था दी कि जिन हिंदुओं (शूद्रों) को जबरदस्ती मुसलमान बना दिया गया है, उन्हें फिर हिंदू धर्म में प्रविष्ट कर लिया जावे।

7. 1923 में सनाढ्य महासम्मेलन (29वां) अलीगढ़ के निकट बरोठ में नहर गंगा के तट पर अध्यक्ष अखिलानंद कविरत्न एवं सचिव कोषाचार्य पं. ब्रह्म बल्लभ मिश्र ने यह प्रस्ताव पास किया कि विशेष रूप से सर्वप्रथम विधर्मी क्षत्रियों को हिंदू बनाया जाए, क्योंकि इन मलकानों के शुद्ध होने पर असंख्या गौओं की रक्षा होगी और सनातन धर्म के लिए यह क्षत्रीय का जीवनोद्देश्य केवल गाय तथा ब्राह्मण की रक्षा करना ही रहा है और सदा रहेगा।

8. प्रन्यासी विश्व में हिंदू परिषद, अध्यक्ष इंद्रप्रस्थ विश्व हिंदू परिषद दक्षिणी दिल्ली विभाग संघचालक राष्ट्रीय संघचालक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघराजेश्वर ने अपना सारा जीवन धर्म परिवर्तन में लगा दिया। 1991 ई तक इस संघचालक ने 10,000 से अधिक शूद्रों, आदिवासियों को हिंदू बनाया है। इसने करीब 100 मुसलमानों तथा 50 शूद्र ईसाइयों को भी हिंदू बनाया है। इसका कहना है कि यह धर्म परिवर्तन शुद्ध कार्य है, जिसे प्रत्येक हिंदू को करना चाहिए।

9. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया), सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ 26 अगस्त, 1999 को राजेश्वर की पुस्तक परावर्तन में लिखा कि यदि हिंदू आबादी का प्रतिशत आज की तरह घटता गया तो भारत का विघटन निश्चित है। इसलिए धर्म परावर्तन आवश्यक है। इसमें तेजी लाएं।

10. राष्ट्रीय स्वयं सेवक वासुदेवानंद सरस्वती, जो जगतगुरू शंकराचार्य हैं, ने परावर्तन में कहा है कि प्रत्येक हिंदू का दायित्व है कि वह परावर्तन कार्य करें, यह आज समय की मांग है। यह कोई नया कार्य नहीं है। परमपूज्य आदिशंकराचार्य जी ने तो परावर्तन के लिए हवनादि के बदले शंखनाद का ही प्रयोग किया। भविष्य पुराण के अनुसार कण्व क्षषि ने मिश्र देश के 10,000 लोगों को हिंदू बनाया। सत्य सनातन वैदिक (हिंदू) मानव धर्म है, परावर्तन एक राष्ट्रीय कार्य है। इससे गाय, गंगा गीता, धर्म और देश की रक्षा होगी।

11. विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष विष्णु हरि डालमिया ने परावर्तन के लिए कहा कि मैं तमाम हिंदुओं से विशेषतया विश्व हिंदू परिषद से एवं अपने अन्य संगठनों के तमाम बिंदुओं से आग्रहपूर्वक निवेदन करता हूं कि वे धर्म परावर्तन की पुस्तक पढ़ें, प्रचार–प्रसार करें तथा धर्म परावर्तन करें। यह राष्ट्रीय कार्य है।

12. विश्व हिंदू परिषद के महामंत्री अशोक सिंहल ने 26 फरवरी, 1992 को 'अस्तित्व का प्रश्न' में लिखा है कि परावर्तन अस्तित्व का प्रश्न है। परावर्तन राष्ट्रीय एवं पुण्य कार्य है। छुआछूत हमारे धर्म का अंग नहीं है। मैं प्रत्येक हिंदू विशेषतया विश्व हिंदू परिषद एवं अपने अन्य संगठनों के कार्यकर्ताओं से अनुरोध करता हूं कि वे परावर्तन कार्य एवं हिंदू समाज में समरसता की दिशा में कार्य करें। परवर्तन प्यार से समझाकर करना चाहिए। अब यह हमारे लिए अस्तित्व का प्रश्न है/हो गया है।

13. आनंद बोध सरस्वती–अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली में परावर्तन के लिए कहा है कि राजेश्वर जी ने प्रत्येक हिंदू से अपील की है कि वह पांच मुसलमान या ईसाई को हिंदू बनाने का संकल्प लें। यह विचार बिल्कुल उचित है। मैं तमाम हिंदुओं का आवाहन करता हूं कि वे नाजुक घड़ी में एकजुट होकर परावर्तन के इस महान कार्य में लग जाएं। इसी से ही हमारे घर बचेंगे। देश बचेगा, गाय एवं गंगा बचेगी।

14. आचार्य महामंडलेश्वर अनंत श्री स्वामी महेशानंद गिरि जी महाराज, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, क्षेत्राधिकारी, दिल्ली, चंडीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, उत्तर प्रदेश एवं संदेश में कहा है कि जो भी हिंदू मुसलमान व ईसाई को हिंदू बनाता है। वह महान पुण्य का भागी होता है। मैं प्रत्येक धर्मावलंबी हिंदू से अनुरोध करता हूं कि वह समय की मांग को समझे और परावर्तन कार्य में संलग्न हो जाएं। मैं मंदिरों के पुजारी एवं संकीर्तन मंडलियों से विशेष अनुरोध करता हूं कि वे भी परावर्तन कार्य में जुट जाएं।

इस प्रकार से आज आर्यों की यह योजना है कि पृथ्वी से मूल भारतीय शूद्रों तथा अन्य धर्मावलंबियों का समूल नाश। धरती पर केवल एक ही जीव रहे ब्राह्मण (शूद्रों) को हिंदू बनाने की राजेश्वर ने यह विधि दी है–व्यवस्थापक मंदिर अथवा अन्य सार्वजनिक स्थान पर यज्ञवेदी और यज्ञ के लिए सब सामग्री आदि का प्रबंध कर लें। पुरोहित उत्तरमुख रखकर वेद मंत्र परावर्तित होने वाले व्यक्तियों से दुहरवाएं तथा गंगा जल का छींटे देता जाए। मंत्र ये हैं –

ऊँ पुनन्तु मा देव जनाः मनसाः धियः
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातिवेदः पुनीति मा–1
ऊँ पवित्रेण पुनीति मा शुक्रेण देव
दीद्यत अग्ने कृत्वा कृतूं अरनु–2
ऊँ अत्ते पवित्रं अर्चिष्यग्ने विततमन्तरा
ब्रह्म तेन पुनात मा–पुनातु मा–3

अर्थात हे विद्वान पुरूषों! संसार के समस्त प्राणी मुझे पवित्र करें। हे आचार्य मुझे अपने ज्ञान रूपी अग्नि के द्वारा शुभ कार्य करने की सामर्थ्य प्रदान कीजिए और आपकी बुद्धि के अंदर जो शुद्ध वेद का ज्ञान भरा हुआ है। उसका उपदेश देकर मुझे पवित्र बनाएं। ताकि मैं अपना आचरण वेदानुकूल बना सकूं।

इस वेद मंत्र के उच्चारण के बाद पुरोहित परावर्तित होने वाले व्यक्ति का नाम हिंदू दे दे। फिर उससे गायत्री मंत्र का उच्चारण कराकर यज्ञोपवीत धारण करा दे। गायत्री मंत्र है – 'ऊँ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।' तत्पश्चात हवन एवं घृताहुति दें।

आइए, जरा उपरोक्त मंत्र पर विचार करें। शूद्र जो आज का दलित है, हजारों वर्ष बीत गए। समस्त प्राणी मुझे पवित्र करें। कोई शूद्र आज तक पवित्र नहीं हो पाया। मुसलमानों और ईसाइयों! सुनो। आज भी द्विज शूद्र को हिंदू बनाकर, उठने, बैठने और बेटी–रोटी का व्यवहार नहीं करते हैं। अपने अग्नि रूपी ज्ञान के द्वारा शुभ कार्य करने की सामर्थ्य प्रदान कीजिए। मुसलमान और ईसाई सुनो! गुलाम शूद्र हिंदुओं का शुभ कार्य है लात खाकर ब्राह्मण, क्षत्रिय की सेवा और पारिश्रमिक के रूप में उनका जूठन रूपी मेवा खाओ। अगर पसंद हो तो देर न करो। आ जाओ। आपकी (पुरोहित की) बुद्धि के अंदर जो शुद्ध वेद का ज्ञान भरा हुआ है उसका उपदेश देकर हमें पवित्र बनाएं। वेद का ज्ञान क्या है? 1. ब्राह्मण बड़ा है–जो ब्राह्मण नहीं वह सबसे छोटा है। 2. ब्राह्मण ऊंचा है–बाकी सभी नीच। 3. ब्राह्मण ही ज्ञानी है– बाकी सब मूर्ख–गधा। 4. ब्राह्मण सात्विक है। शेष सभी तामसिक। 5. ब्राह्मण वेद पाठ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं करेगा और खाएगा। घी, मलीदा, पूड़ी, पकवान समस्त चौंसठो व्यंजन। 6. जो ब्राह्मण नहीं है। वह मर–मर करेगा अपना खून–पसीना बहाकर और सब कुछ बनाकर ब्राह्मण को दे देगा। ब्राह्मण अपच होने तक टांग पसारे खाएगा और जो उसका जूठन बच जाएगा वह अब्राह्मण खाएगा।

7. अकड़कर सीना तानकर ब्राह्मण चलेगा अब्राह्मण सिर झुकाकर चलेगा। ब्राह्मण से जबान नहीं लड़ा सकेगा। ब्राह्मण के बराबर में बैठने पर चूतड़ का मांस काट लिया जाएगा और आपकी बहन–बेटी उनकी रखैल होगी। 8. शिक्षा, सभ्यता से सदा दूर रखा जाएगा और 9. मानवाधिकार शब्द आपकी जुबान पर नहीं आ सकता। वर्ना जबान काट ली जाएगी। यही वेद का ज्ञान है, यही है वैदिक व्यवस्था। यदि पंसद हो हिंदू बनिए और मैं अपना आचरण वेदानुकूल बना सकूं। भारत का मूल निवासी शूद्र एक नस्ल है जाति नहीं। आर्यों और शूद्रों का संघर्ष जातिय नहीं नस्लीय संघर्ष है। मुसलमान एक अलग नस्ल है। ईसाई एक अलग नस्ल है। वर्णसंकरता सबमें है पर स्वतंत्र अस्तित्व में कोई भेद नहीं। और मेरी चेतावनी है कि शूद्रो (S.C.,S.T.) वैदिक ब्राह्मण बनने की महत्वाकांक्षा छोड़ दो और अपनी असलियत को पहचानो। शेर हो शेर रहो, गीदड़ मत बनो।

प्रमुख संदर्भ एवं टिप्पणियां

1. सनातन शुद्धि शास्त्र और आर्यों का चक्रवर्ती राज्य,
लेखक–गोविंद प्रसाद शास्त्री, प्रकाशक–रघुनाथ चंद्र आर्य,
स्टुडेंट बुक डिपो, रोशनपुरा, नई सड़क दिल्ली
महाशिवरात्रि संवत्–2014, समर्पण–29 जून 1929 ई.
2. पंडित गोविंद प्रसाद शास्त्री–सांख्य दर्शन
पंडित गोविंद प्रसाद शास्त्री–गीता में ईश्वर का स्वरूप
पंडित गोविंद प्रसाद शास्त्री–संस्कार पुष्पांजलि
पंडित गोविंद प्रसाद शास्त्री–स्वर्ग में हड़ताल
पंडित गोविंद प्रसाद शास्त्री–ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका
प्रकाशक–स्टुडेंट बुक डिपो, नई सड़क दिल्ली
3. पंडित श्रीराम बुक डिपो, नई संड़क दिल्ली
4. धर्म परावर्तन क्यों और कैसे–लेखक–राजेश्वर
सुरूचि प्रकाशन, केशव कुंज झंडेवाला नई दिल्ली–110055
प्रथम संस्करण–19992 ई.
5. राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) सर संघचालक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ दो शब्द–धर्म परावर्तन क्यों और कैसे, 26 अगस्त, 1999 ई.
6. वासुदेवानंद सरस्वत–प्रत्येक हिंदू के लिए संदेश–परावर्तन
7. विष्णुहरि डालमिया–अध्यक्ष–विश्व हिंदू परिषद–22 फरवरी, 1992 परावर्तन क्यों और कैसे–यह राष्ट्र कार्य हैं।
8. अशोक सिंहल–(अस्तित्व का प्रश्न–धर्म परावर्तन)–26–2–1992 ई.
9. आनंद बोध सरस्वती–प्रधान–सार्वदैशिक आर्य, प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–26–2–1992 ई.

साभार :
शूद्रों का प्राचीनतम इतिहास
एस. के. पंजम
पेज नं. 182 से 212

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

मेले और तीर्थ स्थल

तिरूपति का वेंकटेश्वर मन्दिर

यों तो तिरूपति एक बहुत बड़ा देवस्थल है। इसमें वेकटेश्वर (1) की मूर्ति हैं जिसके चार भुजाएँ है। मन्दिर के तीन अहाते हैं। एक अहाते में ध्वज स्तम्भ सोने के पत्तर में मढ़ा हुआ है। मूर्ति पर कपूर से मालिस और बाल अर्पित करने की परम्परा है। यहाँ वेंकटेश्वर के अलावा कई अनेक मन्दिर हैं। पहाड़ी के नीचे कई दर्शनीय स्थल हैं। यहाँ पुष्पकारिणी नामक एक सरोवर है। यहाँ कपिल तोर्थम एक तालाब है। कोदण्ड रामास्वामी का मन्दिर एक बड़ा मन्दिर है। तिरूपति का मन्दिर समुद्र तल से 860 मीटर ऊँचाई पर है यहाँ प्रतिदिन इतनी भीड़ लगी रहती है कि हर दिन एक उत्सव और मेला का दिन मालूम होता है। क्लवों टूरिस्ट रेस्ट हाउस प्राइवेट धर्मशालायें और अनेक सरायें इसीलिए बनी हैं ताकि यात्री वहाँ रात को ठहरे यहाँ सराय धर्मशाला और गेस्ट हाउस और सराय मालिक पन्डों के ऐजेण्ट होते हैं। वहीं से पण्डित यात्री को पकड़ा देते हैं। यात्री से मनमाने पैसे स्वयं लेते और पण्डों को दिलाते हैं। ये धर्मशाला, सराय, होटल, शराब जुआ एवं वैश्यावृत्ति के अड्डे हैं जो स्वयं सेठ और पण्डे चलाते हैं।

चन्द्रगिरि प्राचीन मन्दिरों के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं यहाँ एक किला है। इस किले में अनेक मन्दिर हैं और अनेक मन्दिरों के भग्नावशेष है पेरूमल्ला पलमी मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। कालाहस्ती में प्रसिद्ध वायु मन्दिर है। काला हस्तीश्वर का मन्दिर भी दर्शनीय है। यहाँ रामायण गाँव में कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी का विशाल मन्दिर है। कैलाश कोण झरने के जल को पुण्यदायक फलदायक मानकर उसमें स्नान किया जाता है नागला पुरम में वेद नारायण स्वामी का मन्दिर है।

यहाँ हर साल मेला लगता है। लाखों लोग मेले में आते हैं। और एक साल में कई रूपयों का व्यय होता है यहाँ जो मेला लगता है उनमें पण्डों को ही आय होती है। प्रतिदिन हजारों ब्राह्मणों के भोजन की व्यवस्था होती है। तिरूपति के मात्र एक मन्दिर की वार्षिक आय 24 करोड़ रूपए है।

हैदराबाद का हैदर महल

हैदराबाद और सिकन्दराबाद दोनों मिले हुए हैं बादशाह कुतुबशाह ने अपनी हिन्दू पत्नी भागमती का नाम बदलकर हैदरमहल रख दिया था। उसी हैदरमहल के स्मारक के रूप में इस नगर, हैदराबाद को बसाया था। यह एक पर्यटन स्थल है जहाँ मेला लगता है। वहाँ ब्लूमून पार्कलेन, नागार्जुन, असरानो, इण्टरनेशनल बंजारा रिटज करोड़ो रूपये के विलायती किस्ल के होटल है। जिनमें नंगा नाच और बालाओं के जीवित माँस का व्यापार होता है। होटल मंदिरालय और वैश्यालय हैं। द्वारिका, सरोवर, राजधानी सिद्धार्थ, अशोका, जया, कृष्णा, रोयल, हरिद्वार, टूरिस्ट ताजमहल अन्नपूर्णा देशी होटल है। हैदराबाद की चारमीनार बहुत प्रसिद्ध है। किसी समय गोलकुण्डा कुतुब शाहों की राजधानी थी जो हीरो मंडी थी। यहाँ तीन सौ एकड़ में एक चिड़ियाघर बना हुआ है। मुसलमान बादशाह ने मक्का से ईंट लाकर मस्जिद बनवाई उसमें ईंट लगाई इसलिए यह मक्का मस्जिद कहलाती है। मुसलमानों को देखा–देखी हिन्दूओं ने एक पहाड़ी पर वे कगेश्वर मन्दिर बनवाया जो संगमरमर का है। इस मन्दिर का बहुत बड़ा मेला लगता है लाखों लोग प्रतिवर्ष हैदराबाद को यात्रा पर जाते हैं। वारन्मल में एक हजारों स्तम्भों बाला मन्दिर है जहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है और तीर्थ स्थल है। जहाँ ताँबे के पीतल की मूर्तियों का व्यपार होता है यहाँ के मन्दिरों की मूतियाँ मोतियों से जड़ी होती हैं। मन्दिरों के खम्बे तक हीरे मोती से जड़े होते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता है एक तरफ हजारों इन्सान हैं जो भूख से दम तोड़ रहे हैं, दूसरी ओर मन्दिर की दीवारें हीरे मोतियों से जड़ी जाती हैं यह है हिन्दुस्तान।

बंगलौर का बुलटेम्पल

बंगलौर हैदरअली और टीपू सुल्तान के लिए प्रसिद्ध हैं यहाँ हैदर का किला है। यहाँ 240 एकड़ का एक [illegible]

बहुत बड़ा मेला लगता है। यह केपगोन्डा ने बनवाया था। इस मन्दिर में 4–6 मीटर ऊंची और 51 मीटर लम्बी वृषम की मूर्ति है। मेले के अवसर पर लाखों तीर्थ यात्री यहां रूपया चढ़ाते और पन्डों को दान देते हैं। यहां पर अशोक, वेस्ट एण्ड बंगलौर इन्टर नेशनल, हाई गेटस आदि अंग्रेजी स्टाइल के होटल है। यहाँ यात्रियों की खूब अय्याशी होती है। बंगलौर की नन्दी पर्वत माला पर एक हजार साल पुराने दो शिव मन्दिर हैं जहां लाखों लोग प्रतिवर्ष दर्शन करने जाते हैं यहाँ पर प्रतिवर्ष करोड़ों रूपया व्यय होता है। यह तीर्थ स्थल सुरा सुन्दरी, जुआ, लूट जेबकटों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ प्रसिद्ध मेला लगता है।

मद्रास का कपिलेश्वर मन्दिर

तमिलनाडु की राजधानी मद्रास है। भारत का चौथा प्रसिद्ध नगर है। यहाँ का सेन्ट जार्ज किला प्रसिद्ध है। किले के अन्दर सेन्ट मेरी का गिरजाघर है। यह प्राचीन शैली का कपिलेश्वर मन्दिर और मयलापुर में प्रसिद्ध शिव का मन्दिर है। तिरूपोलर मद्रास से 40 कि.मी. दूर एक पुराना मन्दिर है। वेदन बंगल में एक प्रसिद्ध जलपक्षी बिहार भी है। मद्रास में वैसे अब द्रविड़ों का राज्य है किन्तु जो दूर मन्दिरों के क्षेत्र हैं उनका आलम उसी प्रकार है जिस प्रकार अन्य स्थानों के मन्दिर और तीर्थ मेलों का। इन मन्दिरों से भी हर वर्ष मेले लगते हैं लाखों रूपया चढ़ावा चढ़ता है। भूमि भवन और वाहन, सोने, चांदी सब मिलाकर करोड़ों रूपए की सम्पत्ति है। सैकड़ों ब्राह्मण इन मन्दिरों से पल रहे हैं। ये मन्दिर, वासना व्यभचार, भ्रष्टाचार पाखण्ड और विलासता के अड्डे बने हुए हैं।

मदुरै का मीनाक्षी मन्दिर

यह नगर नदी के तट पर बसा हुआ है। इस शहर के बीचोंबीच मीनाक्षी सुन्दरेसुरम मन्दिर है। यह मन्दिर देश के प्राचीन मन्दिरों में माना जाता है। यह हिन्दू राजा कुलासेकर ने बनवाया था। यह मन्दिर 847 फुट लम्बा और 792 फुट चौड़ा है। इस मन्दिर के बाहर 5 स्तम्भ है। वैसे इसमें हजारों स्तम्भ हैं। यह दोहरा मन्दिर है। पास में ही शिव का मन्दिर है। हजारो स्तम्भ वाले कक्ष में मन्दिर कला संग्रहालय है। एक बहुत पुराना मन्दिर मदुरै नगर के पश्चिम में कुडल अलागार मन्दिर है इसमें अनेक देवी देवताओं की मूर्तियाँ खड़ी हुई, झुकी हुई मुद्रा में एक दूसरे के ऊपर बैठी हुई वासना की मुद्राए प्रदर्शित करती हैं। यहाँ भगवान भक्ती और भोग साथ–साथ चलता है। मदुरै से 8 किमी. दक्षिण में सुब्रामनियम का मन्दिर है। इस मन्दिर का भीतरी कक्ष गुफा नुमा पत्थरों को काट कर बनाया गया है। मनोकामना पूरी करने के लिए भक्त या भक्तिन और दूसरा पंडा होता है। मदुरै से उत्तर पूर्व में पहाड़ी के दक्षिणी छोर पर प्रसिद्ध विष्णु का मन्दिर है। मीनाक्षी सुन्दरेसुरम तथा कुंडल अलागार मन्दिरों में बहुत बड़े–बड़े मेले भी लगते हैं वैसे तो प्रतिदिन ही सैकड़ों दर्शकगण यहां आते रहते हैं। इन मन्दिरों की कई करोड़ की पूँजी है। हजारो पंडे इनसे पलते हैं, लाखों की सालाना आय होती है। इन मन्दिरों में बलात्कार, लूट हत्या, ठगई क्या नहीं होता। जुआ, जेबकटी मुख्य व्यवसाय है। भीख और जेब तरासी ठेके पर उठाई जाती है। जिसकी नीलामी बोली लगती है। हवन यज्ञों में हजारों की सामग्री फूक दी जाती है।

महाबली पुरम के महाबली

बंगाल की खाड़ी के किनारे प्रसिद्ध बन्दरगाह रहा है। यहाँ पल्लवों के बनवाए स्मारक आज भी लाखों लोग देखने आते हैं। ये स्मारक पत्थरों के बने हुए हैं जिनमें गरीब मजदूर का खून पसीना दूर से झलकता दिखाई देता है। यहां नौ गुफा मन्दिर हैं जो चट्टानों को काटकर बनाये गए हैं इसमें कृष्ण मन्डपम काफी प्रसिद्ध गुफा है। इस गुफा में सिद्ध प्रार्थना होती है। इस मन्दिर में विशेष दान चढ़ावा लेकर कार्य सिद्ध प्रार्थना करायी जाती है। इसमें हजारों रूपया पंडे सेठों और धर्म भीरू जनता से ठग लेते हैं। महाबली पुरम में 27 मीटर लम्बी और 9 मीटर चौड़ी पत्थर की मूर्ति है। पहाड़ों के दक्षिण में 5 मन्दिर ऐसे हैं जिन्हें पहाड़ों को काटकर ही बनाया गया है। इन मन्दिरों को देखने से पता चलता है कि इनका निर्माण सैकड़ों वर्षों में हुआ होगा हजारों मजदूरों ने बेमजदूरी का काम किया होगा और उन्हीं मजदूरों के वंशजों (शूद्रों) को इन मन्दिरों में घुसने नहीं दिया जाता है। महाबलीपुरम में प्रसिद्ध मेला लगता है। महाबली के इन मन्दिरों को प्रतिवर्ष करोड़ों रूपया चढ़ौना इकट्ठा होता है, जिससे पंडे पुजारी पलते हैं। यहाँ शराब, भाँग, अफीम का व्यापार होता है। पाखण्ड अन्धविश्वास, व्यभिचार का बोलबाला है। यहां वार्षिक मेला लगता है। इन मन्दिरों की सम्पत्ति 50 करोड़ की है।

ऊंडी कमन्ड

यह तमिलनाडु में पर्वतीय स्थान पर सुन्दर स्थल है। ऊंटी के रेसकोर्स मैदान में हर समय मेला लगा रहता है। सैकड़ों मंदिर, फूलों का बाग और विभिन्न प्रकार के जानवर देखने को मिलते हैं। यहाँ पर विदेशी पर्यटक आते हैं उनकी इतनी ठगाई होती है कि उनकी जेबें खाली कराली जाती हैं। कभी–कभी उनकी महिलाओं के साथ धोखा देकर बलात्कार किया जाता है। इस जगह ने भारत को बदनाम कर रखा है।

कीडा द्कनाल

यह एक सुन्दर पहाड़ी स्थल है। जो पश्चिमी घाट की पर्वत मालाओं में स्थित है। सुन्दर झील, झरने, वन और रमणीक स्थल है। यह अत्यन्त रमणीक स्थल हैं जहाँ विदेशी पर्यटक आते हैं यह पर्यटन स्थल जहाँ के होटल वालों के व्यवसाय का केन्द्र है। यहां कुरूंगी का प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर पर बड़ी दुरबीने लगी हैं। इस मन्दिर पर बहुत बड़ा मेला लगता है।

कांची पुरम के मन्दिर

यह हिन्दू धर्म का केन्द्र रहा है। अनेक मंदिरों का यह तीर्थ स्थल हिन्दू स्थापत्य कला को प्रदर्शित करता है। कांचीपुरम और इसके आप–पास एक हजार मन्दिर तथा दस हजार लिंग है। अकेले काँचीपुरम में 200 मन्दिर हैं। यह हिन्दुओं का बहुत बड़ा तीर्थ स्थल है। नगर में 18 विष्णु मन्दिर हैं जिनमें बैकुन्ठ पेरूमल प्रसिद्ध है। मन्दिर के अहाते में चालुकों और पल्लवों के युध चित्र हैं। कैलाशनाथ मन्दिर भी बहुत प्रसिद्ध है। अम्बरेश्वरम मन्दिर बहुत पुराना मन्दिर है इस मन्दिर में 5 अहाते तथा हजारों खम्बों का एक कक्ष है। दक्षिण की ओर का स्तम्भ 188 फुट ऊंचा है। वरदराजार मन्दिर एक पुराना विशाल मन्दिर है। इसमें 100 खम्बे का एक कक्ष है जिसमें बहुत सुन्दर नक्कासी की गई है। कामाक्षी मन्दिर चोल राजाओं का बनवाया हुआ बहुत प्राचीन मन्दिर है। बेगवती नदी के किनारे बना जैना काँची मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ वार्षिक मेला लगता है।

कांची पुरम के मन्दिरों में दस हजारों पंडो व उनके परिवार के व्यक्तियों का नियमित भोजन चलता है। इन मन्दिरों में वैसे तो प्रतिदिन मेला लगा रहता है। पर साल में 24 बार मेला लगता है लाखों लोग प्रतिमाह यहाँ यात्रा करने आते हैं। करीब 5 करोड़ रूपए की प्रतिवर्ष आय होती है। 16 वर्ष से लेकर 60 वर्ष तक की स्त्रियाँ इन मन्दिरों में पुजारिन हैं जो पंडों महन्तों की रखैलों का काम करती हैं। यहाँ महिलाएं मन्दिरों पर आने वाले विदेशी यात्रियों के लिए देशी बालाओं का प्रबन्ध तक करती हैं और मनमाना धन ऐठती हैं। मन्दिरों में करोड़ों रूपयों की पूंजी लगी हुई है। इन मन्दिरों के ट्रस्ट अपने व्यवसाय चलाते हैं। अनेक खम्बों व मूर्तियों, पर सोने के प्रस्तर चढ़े हुए हैं। शराब और सुन्दरियों का व्यापार खुलेआम होता है। हजारों एकड़ भूमि मन्दिर के नाम है। भगवान के नाम पर व्यापार उद्योग चलते हैं। इनकी बसे हैं, दुकाने हैं और कारखाने हैं। मन्दिर के मेले में वैश्याओं के कैम्प लगते हैं जहाँ योनि व्यापार होता है। बहुत से पण्डे तस्करी करते हैं। यहां भगवान के नाम पर व्यभिचार का अड्डा है।

श्रवण बेलगोल के बाहुबली

यहां पत्थर की मूर्तियों की भरमार है। श्रवण बेल

गोल दो पहाड़ियों के बीच बसा एक गाँव है। एक चट्टान पर तरासी हुई मोमतेश्वर की 17 मीटर ऊंची विशाल मूर्ति है। बाहुबली की यह मूर्ति पूर्णरूपेण नग्न है। हर बारह साल में यहाँ एक बार महामस्तका–भिषेक समारोह होता है जिसमें लाखों लोग इकट्ठे होते हैं। इस गोमत (बाहुबली) की मूर्ति पर मचान बनाकर सिर से जल, घी, दूध डाला जाता है। मूर्ति के शरीर में काफी मात्रा में नारियल का पानी, केले, घी, गुण, खजूर, वावान, पोस्त के बीज, दूध, दही, चन्दन, फल, हीरे, मोती, चांदी और सोने के सिक्के डालते हैं। इस अवसर पर धर्म के नाम पर एक बार में करोड़ों रू. बरबाद कर दिया जाता है। करोड़ों रूपए का चढ़ावा चढ़ाया जाता है। विध्यगिर के उत्तर में चन्द्रगिर है यहाँ अनेक मन्दिर हैं। हासन कस्बा में होयशाला मन्दिर राजा विष्णु वर्धन ने बनवाया था। बेल्लूर का चन्ना केशव मन्दिर प्रसिद्ध है। यहाँ पत्थरों पर अनेक मूर्तियाँ बनी हुई हैं। सैकड़ों की संख्या में इन मूर्तियों की विभिन्न मुद्राएं देखने को मिलती हैं। सभी मूर्तियां एक दूसरे से भिन्न हैं। मन्दिरों को दीवारों पर एक इंच भी खाली जगह नहीं है। इन मूर्तियों में स्त्रियों को नाचती श्रृंगार करती सीसे में मुंह देखती मिलती है। मूर्तियों के केश विन्यास और चुस्त पतलूने सब तरह के नमूने हैं। अश्लील से अश्लील चित्र देखने को मिलते हैं। वासना, विलासता और उन्माद की प्राचीन हिंदू संस्कृति इन मूर्तियों से पूर्ण प्रदर्शित होती है। उठे स्तन, नग्न कमर, चुम्बन और आलिंगन के धर्म स्थल पर बने चित्र हिंदू संस्कृति और सभ्यता की कहानी कहते हैं।

इन मन्दिरों पर करोड़ों रूपया व्यय होता है। करोड़ों का चढ़ावा आता है। सोना चाँदी की भरमार हैं। इन मूर्तियों और मन्दिरों के सहारे यहाँ के पुजारियों व सेठों के कारोबार चलते हैं। हजारों एकड़ भूमि, टनों सोना, दुकाने, होटल वाहन बंगले इन मन्दिरों की सम्पत्ति के सहारे हजारों पुजारी पलते हैं। मन्दिर और वैश्या भोग भी इसी पैसे के प्रयोग से लगाए जाते हैं इन मन्दिरों की कहानी नितांत घृणित और अपराधिक है। यहाँ वार्षिक मेला लगता है। इन मन्दिरों की एक लाख रू० प्रतिदिन की आय है। पंडे शराब, भाँग का व्यापार व तस्करी करते हैं। पूजा के नाम पर लूट, हत्या करते हैं। यात्रियों को पण्डे भोग हेतु स्त्रियों को उपलब्ध कराते हैं।

पंचमढी की गुफाएँ

यह हिन्दुओं का तीर्थस्थल है। यहां पठार एवं पहाड़ियों में पाँच गुफाएं हैं। कहते हैं पान्डव 12 वर्ष तक इन्हीं गुफाओं में अज्ञातवास में रहे थे। यह एक पूज्य स्थल है। सारे देश के हिन्दू इन गुफाओं के दर्शन करने आते हैं। इन मंदिरों में अनेक ब्राह्मण लोग रहते हैं जो इनका प्रबन्ध करते हैं और धन लूटते हैं। हर समय यहां मेला सा लगा रहता है। उस मढ़ी के दर्शन कार्यक्रम पर प्रतिवर्ष भारत में करोड़ों रूपया व्यय किया जाता है।

चौरागढ़ एक पहाड़ी स्थान है। यह शिव की पहाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। इनकी चोटी पर जाने वाले सारे मार्ग पर हजारों त्रिशूल गड़े मिलेंगे जो यात्री शंकर जी की श्रद्धा में गाढ़ देते हैं। जिन्हें शिव भक्तों ने गाढ़ा है। पंचमढ़ी की परिधि में ही धूपगढ़ पहाड़ी है। पंचमढ़ी में एक गुफा में शिवजी की प्रतिमा बनी हुई है। जहाँ लाखों लोग इस मूर्ति के दर्शन करने आते हैं। जम्बू दीप जलधार का श्रोत शंकर की जटाए हैं। कहते हैं भष्मासुर के डर के कारण शिवजी इन्ही मढ़ियों में छिप गए थे। महादेव पर्वत की तलहटी में एक मन्दिर है जिसमें शिव की प्रतिमा स्थापित है। यहां हर साल शिवजी का बहुत बड़ा मेला लगता है। करोड़ों रूपया चढ़ावा चढ़ता है, करोड़ों रूपए यात्रा पर व्यय होता है। सैकड़ों ब्राह्मणों के परिवार इस मन्दिर से पलते हैं। शिवरात्रि के मेले के दिन लाखों की भीड़ इकट्ठी होती हैं लोग नशा करके नाचते है। यहाँ वार्षिक मेला लगता है

उज्जैन का महाकाल मन्दिर

यह वही उज्जैन है जहाँ के राजा वीर विक्रमादित्य की 100 मन सोना प्रतिदिन दान करने की कहानी प्रसिद्ध है। यहाँ हर 12 वर्ष पश्चात कुम्भ का मेला लगता है। यह हिन्दुओं का बहुत बड़ा देवस्थल एवं तीर्थ स्थल है यहां शिव का महाकाल मन्दिर बहुत प्रसिद्ध मन्दिर है जो बारह ज्योतिलिगों में एक है। यहां के गोपाल मन्दिर में कृष्ण की चांदी की प्रतिमा लगी हुई है। यहां संदीपनी आश्रम है जहां पंडों और साधुओं की हर समय भीड़ लगी रहती है। कृष्ण, सुदामा और बलराम का शिक्षा आश्रम होने से बहुत बड़ा तीर्थ स्थल बन गया है। देवास में देवकी का मन्दिर और माकसो तथा नागदा मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है।

यह वह स्थल है जहां कुम्भ मेले के समय एक लाख से अधिक लोग प्रतिदिन इकट्ठे होते हैं और कम से कम दस करोड़ रूपया खर्च होता है। सरकार का भी करोड़ों रूपया व्यय होता है। लाखों पंडों का भोजन चलता है करोड़ों रूपया चढ़ौनी में चढ़ता है जिसे पंडे हड़प करते हैं। इस मेले में हजारो स्त्रियों के अपहरण और हजारों के साथ बलात्कार की घटनायें होती हैं। बीमारी आदि से सैकड़ों लोग मर जाते हैं। इस मेले पर इतना व्यय होता है कि एक प्रदेश की एक पंचवर्षी योजना चल सकती है पर धर्म के नाम पर वह धन पानी की तरह बहा दिया जाता है। यह मेला व्यभिचार, पाखण्ड और अपराध का अड्डा बन जाता है। इस मेले में शराब के ठेके लगते हैं जुए के अड्डे कायम हो जाते है। तो तीर्थ यात्री जाते हैं उनके लिए धर्मशालाओं और होटलों में कोलगर्लस का प्रबन्ध होता है। धर्म के नाम पर कुम्भ के समय यहां सब कुकर्म होते हैं। यहां वार्षिक मेला लगता है। इसमें अछूतों का प्रवेश वर्जित है।

त्रिवेन्द्रम का पद्नाभ मन्दिर

यह केरल की राजधानी है। श्री पदमनाभ विष्णु का एक बहुत बड़ा मन्दिर है। यह प्रसिद्ध मन्दिर है। सात मंजिला इस मन्दिर में ग्रेनाइट के तीन सौ खम्भे हैं यह मन्दिर एक किले के बीच में है। इस मन्दिर में सैकड़ों किस्म की मूर्तियां हैं। अजन्ता जैसे आसनों के चित्र स्त्री स्तन व गुप्तांगों का खुला प्रदर्शन इन चित्रों में मिलता है ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दू ऋषियों ने रति किया में सभी सम्मावित ढंगों की भक्तों को व्यवहारिक शिक्षा दी थी। कोई भी इन चित्रों को देखकर भक्तीभाव छोड़कर वासना मुग्ध हो जाता है। स्त्री की वासना क्रियाओं से पता चलता है कि हिन्दू धर्म उसका स्वरूप मात्र वासना सामग्री के रूप में हो रहा है। यहां विदेशी महिलायें व पुरूष भी आते हैं क्योंकि वह समुद्रतटीय प्रदेश में है। जो भी विदेशी यहां आता है उसके साथ बड़े–बड़े होटलों में लुटाई होती है। स्त्रियों के साथ बलात्कार होता है। ऐसी घटनाएं भी सुनी गई। यह होटल, लाज, धर्मशाला टूरिस्ट, होम, गेस्टहाउस के नाम से व्यापार का अच्छा खासा अड्डा है। यह व्यापार वहां के वैश्य और ब्राह्मण करते हैं। वैसे तो सभी तीर्थ स्थल ब्राह्मणों के व्यापार के अड्डे हैं पर खासतौर से तटीय–प्रदेश तीर्थस्थल उनकी अरबों रूपया आय के साधन हैं।

वैसे दक्षिण के हर मन्दिर में देवदासी प्रथा चलती है। मूर्ति के सामने घुंघरू पहनकर युवा महिलाये नाचती और गाती हैं। ये तो सब हिन्दुओं के भगवान के नाम पर होता है और ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दूओं का भगवान, स्त्रियों का नाच गाना बहुत पसन्द करता है पर त्रिवेन्द्रम में नारियल ताड़ के उपवन हैं, इन उपवनों में टूरिस्ट काटेज बने है। यहां कत्थकली नृत्य का एक खुला मंच भी है। सुचिद्रमा में एक बहुत बड़ा मन्दिर है। काट्टायम के रास्ते में पहाड़ियों पर अनेक हिन्दू मन्दिर बने हैं। इन मन्दिरों में पन्डे अपना खूब धन्धा चला रहे हैं। यहां वार्षिक मेला लगता है।

कोचीन के मन्दिर

कोचीन विदेशियों का अड्डा रहा है। यहां कोचीन–केगानोर, त्रिचूर मंदिरों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। त्रिचूर का बढ़ाक्कुनाथन प्रसिद्ध मंदिर है। गुरूवयूर में कृष्णा का मंदिर दर्शनीय है मंदिर के पास अपना बहुत बड़ा मैदान है जिसमें हाथी बंधे रहते हैं। चेरथुरूथी मंदिर घोर नाच के लिए प्रसिद्ध है। यहां मैदानों में पेड़ों के नीचे अनेक स्त्री पुरूष दिखाई देते है। ऐसा प्रतीत होता है कि नाच रंग और विलासता के सिवास इनके जीवन का कोई दूसरा अर्थ है ही नहीं। यह हिन्दू संस्कृति का नग्न चित्र है। यहां वाकायदा एक नृत्यग्रह भी बना हुआ है। कोजिकोड के उत्तर पूर्व में सुलतांसबेटरी के गांव के पास एक बड़ा मंदिर स्थल है जिसमें खूब नाचरंग होता है यह समुन्द्री बंदरगाह स्थल है जहां विदेशी यात्रियों की भरमार रहती है। इन विदेशियों को हिन्दू धर्म के ठेंकेदारों ने लूटने ठगने के कितने ही हथकन्डे अपना रखे हैं जिनमें नाचरंग और सुरा सुन्दरी की विलासता के साधन भी हैं। यहां वार्षिक मेला लगता है।

कन्याकुमारी के मंदिर

यह भारत भूमि का सीमान्त स्थल है। यहां अरब सागर हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी का संगम स्थल है। कन्याकुमारी का अम्मान मंदिर प्रसिद्ध है। मूचि द्रभ में तनुमलायन मंदिर भी बहुत प्रसिद्ध है। इस मंदिर में वासना, विलासता, मादकता और अपराधिक निवृत्ति का नग्न स्वरूप दिखाई देता है। यह मंदिर बहुत से राजवंशियों का कला संग्रह भी है। तिरचेन्दूर का प्रसिद्ध मंदिर समुद्र तट पर है। पद्मनाभपुरम् में किले के पास राधास्वामी मंदिर है जो 45 खण्डों में बना हुआ हैं। इसमें स्त्री पुरूषों के वासना और रतिक्रिया युक्त चित्रों की खुदाई की विशेष छटा दिखाई देती है। नागर कोइल में नागराज का मंदिर है जहां शिव और विष्णु की मूर्तियां भी हैं। इन मंदिरों के निर्माण में पचासों वर्ष लगे और करोड़ों रूपया व्यय हुआ होगा।

उपरोक्त मंदिरों में सभी में वार्षिक मेले लगते हैं। लाखों लोग इकट्ठे होते हैं जिनमें करोड़ो रूपये की नगदी, सोना, चांदी प्रतिवर्ष चढ़ावा आता है। प्रति मंदिर में 500 से 1000 पंडों का, भोजन, वस्त्र और विलासता प्रतिदिन चलती है। इन मंदिर के पास करोड़ों का सोना, हजारों एकड़ भूमि, अपनी निजी दूकानें और व्यवसायक कारखाने हैं। विद्यालय, स्कूल भी व्यवसाय के श्रोत बना रखे हैं, मंदिरों में विदेशी लोगों की लुटाई और जेब तरासी की जाती है महन्त महिलाओं का व्यापार करते हैं। और विदेशी लोग यहीं से विदेश को रखैल और नौकर बनाने के लिए भारत बालाएं ले जा रहे हैं। इस व्यवसाय के केन्द्र इन तीर्थ स्थलों पर बने हुए हैं। इतना ही नहीं यात्रियों को ठहराने, सुरा सुन्दरी का भोग देने के लिए हिन्दुओं ने यहां तक स्वयं महन्तों ने मंदिर की ओर अनेक होटल, हाउस, देव स्थानम, लाज, टाउनशिप खोल रखे हैं। यहां पच्छिमी ढंग के नये कई होटल खोल लिए गए हैं। जिनमें घंटों की दर से स्त्री बिकती है, शराब बिकती है। गाय, बैल, भैंस, बकरा, तीतर, मुर्गा, बटेर, कबूतर, नीलगाय सबका मांस बिकता है। ऐसा सहत में प्रतीत होता है कि इन मंदिरों के सहारे बूचड़ खाने चलते हैं, और ठगों, जेब तरासी चोरी बलात्कार का व्यापार चलता है। ये चोर ठग, जेब कट, महन्तों के वेतन भोगी होते हैं। यहां प्रसिद्ध वार्षिक मेला लगता है।

रामेश्वरम का मंदिर

रामेश्वरम का मंदिर भारत में प्रसिद्ध मंदिर है और हिन्दुओं का यह बहुत प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है, रामेश्वरम एक टापू है रामेश्वर सरायों के लिए प्रसिद्ध है। इस द्वीप में पूर्व तट के निकट स्वामी मंदिर है। इस मंदिर के गलियारों के खम्बों में अनेक प्रकार की छोटी मूर्तियां बनी हैं। इस मंदिर में बहुत ऊंचे स्तंभ है जिसमें एक स्तंभ 38.4 मीटर ऊँचा है। मंदिर में 500–600 फुट लम्बे गलियारे हैं। इन गलियों में जो छोटी–छोटी मूतियाँ बनी है उनकी आकृति को देखकर कोई भी व्यक्ति वासना से व्याकुल हो जाएगा। यहाँ तो 84 आंसनों से रतिक्रिया करते चित्र, आलिंगन, चुम्बन जीवन के लिए प्रेरित करता है। यह धर्म के नाम पर किया गया है।

विरही और कामुक लोगों का यह तीर्थ स्थल है जहाँ समुद्र की लहर सुनहरी रेत, नारियल के पेड के झोके उनकी वासना की तृप्ति में सहारा देते हैं। इन मंदिरों की बनावट की कीमत आज दस करोड़ से कम न होगी। एक करोड़ रूपया का वार्षिक चढ़ावा जाता है। इस मंदिर के पास हजारों एकड़ भूमि है। अपना निजी परिवहन है। सैकड़ों दुकाने हैं। अनेक धर्मशाला, होटल भी मंदिर की ओर से चल रहे हैं। मंदिर की मूर्ति और इस पर चढ़ा सोना, करोड़ों रूपए का है। यह पंडा समाज का अच्छा खासा व्यवसाय केन्द्र है जिससे उनके सैकड़ों परिवार पलते हैं।

यहाँ तमिलनाडू होटल एक ऐसा है जहाँ शौक के लिए सब कुछ होता है। यहां साल में कई बार मेला लगता है। मेले के समय पंडों, व्यापार होटल वालों की चांदी तो हो ही जाती है साथ ही जुआरी, जेब तरासी, अय्यासी,

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

अपराधी, ठग, लोगों की पौ बारह हो जाती है। शराब जुआ और व्यभचार के अड्डे कायम हो जाते हैं। हमारी धर्म निरपेक्ष सरकार भी इन मंदिरों के ट्रस्टों को लाखों रूपया देती है। जिससे पंडे अय्यासी करते हैं। स्कूल उद्योग इस मंदिर के निजी हैं। जिनके नाम से करोड़ों रूपया अनुदान लिया जा चुका है। यहा प्रसिद्ध वार्षिक मेला लगता है।

गंगटौक

यह 1524 मीटर ऊंचाई पर बसा हुआ है और सिक्किम की राजधानी है। 1716 में यहाँ गंगटोक मठ बनवाने के लिए समतल किया गया था। यहाँ टीले पर चोग्यल का राजकीय पवित्र भवन है। यह दर्शनीय स्थल है। गंगटोक में बहुत बड़ा मेला लगता है। इस स्थान को भी हिन्दू व्यापारियों ने भ्रष्टाचार, अपराध और वासना का अड्डा बना दिया है जो कभी बौद्ध संस्कृति का पवित्र स्थान था।

बम्बई के मन्दिर

इस नगर का नाम ही मुवा देवी के नाम पर पड़ा है। मराठी में बम्बई को आज भी मुंबई लिखते है। गेट वे आफ इंडिया के पास शिवाजी और स्वामी विवेकानन्द की मूर्तियाँ स्थापित हैं। बन्दरगाह से करीब 8 मील दूर ऐलीफन्टा दीप पर गुफाएं बनी हैं जहाँ चट्टानें काटकर मन्दिर बनाये गए हैं। कन्हेरी की गुफाओं की संख्या 100 से अधिक है जो संतों की कन्दराएं हैं। यों तो बम्बई बहुत मानों में प्रसिद्ध है छल, कपट, ठगी, अय्यासी, विलासता और वैभव और नारीत्व के व्यापार की नगरी पाश्चात्य देश की किसी भी सभ्यता को मात करती है पर खासतौर से मन्दिर गुफाएँ, कन्दराओं में जो कुछ होता है उससे विलासता और वामना की पराकाष्ठा की झलक मिलती है। यहाँ इन कन्दराओं में वार्षिक मेला लगता है जहाँ बाहर के टूरिष्ट आते हैं और देशी विदेशी सबकी मुड़ाई होती है। इन गुफाओं के दर्शन से ऐसा प्रतीत होता है कि इनके बनाने में 100 वर्ष से भी अधिक समय में भूखे नंगे लाखों मजदूरों के खून पसीने से पत्थर काटा गया होगा। बाद में धर्म ठेकेदारों ने इन गुफाओं कन्दराओं पर अपना कब्जा कर लिया और अपने व्यवसाय का माध्यम बना डाला। इन गुफाओं के अश्लील चित्र हिन्दू संस्कृति की कहानी कहते है। ये गुफाएँ स्मगलिंग, तस्करी, नारी, अस्मत की लुटाई और काले धंधे का केन्द्र बन जाती है जहाँ किसी की निगाह तक नहीं जाती।

महावलेश्वर का मन्दिर

यह समुद्र तल से 1372 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। यह धर्म स्थल के नाम पर चट्टानी मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। चट्टानों को काटकर मंदिर बनाये गए हैं। मंदिरों में मूर्तियां भी पत्थरों को काटकर बनाई गई हैं। यह प्रतीत होता है कि इन चट्टानी मंदिरों के बनाने में आज के लाखों रूपए की लागत लगी होगी। लाखों–लाखों मजदूरों के खून से बने ये मंदिर उन्ही के खून को आज भी पी रहे हैं। करोड़ों रूपए की सम्पत्ति वाले ये मंदिर जिनके मालिक निठल्ले पण्डे हैं। ये मनुष्य की नैतिक दासता पाखण्ड अंधविश्वास विलासता की कहानी कहते हैं। पण्डों के ये मंदिर हिन्दूओं के तीर्थ स्थल है जो लाखों के व्यापार के साधन हैं। इनकी करोड़ों की सम्पत्ति और करोड़ों की वार्षिक आय है। जिसका भोग पण्डे जाति के नाम पर भोग रहे हैं। एक–एक मूर्ति को छांटकर बनाने में कई–कई हजार रूपया व्यय हुआ है। हर पर्व त्यौहार पर इन मंदिरों की आय प्रतिदिन कई हजार तक पहुँचती है। यहां पर अंग्रेजी किस्म के अनारकली डीलक्स, ब्लू पार्क, फ्रेड्रिक, मेफेयर आदि आवास गृह व्यवसाय के श्रोत होने के साथ–साथ सुरा–सुन्दरी और विलासिता की पूर्ति के केन्द्र हैं। नारी की कला के साथ यहाँ उसका तन भी बिकता है। यह ऐसा है धर्म का अड्डा। जब पण्डा अंध–विश्वास फैलाकर लूटता है तो सुविधा का भोग प्रदान कर दूसरी ओर व्यवसायी लूटता है। यहां बनियों पण्डों और पुरोहितों ने प्रदान कर दूसरी ओर व्यवसायी लूटता है। यहां बनियों पण्डों और पुरोहितों ने बड़े–बड़े बँगले बना रखे हैं जिनमें यात्रियों से ठहराने के सैकड़ों तो लेते ही हैं उनके लिए शराब और कालगर्ल सप्लाई कर मनमानी लुटाई करते हैं। धर्म के नाम पर पण्डा और बनिया दोनों कमाई करते हैं।

महावलेश्वर में अनेकों मदिर हैं। महावलेश्वर मंदिर के नाम पर ही इस नगर का नाम महावलेश्वर पड़ा है। यहां कृष्णावाई राम और हनुमान के प्रसिद्ध मंदिर है। यहाँ 32 कि.मी. दूर बांई नाम का छोटा नगर है जो पुराने मंदिर समूह के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ कई बार बड़े–बड़े मेले लगते हैं। इन मंदिरों की आय प्रतिवर्ष कई लाख रूपया होती है। एक–एक मंदिर को 50–50 लाख से अधिक की सम्पत्ति है। ये मंदिर व्यापार, व्यभचार और अंध–विश्वास ठगई के अड्डे हैं।

लोनावाला खन्डावाला

यह एक पर्वतीय स्थल है। लोनवाला के निकट कारला भाजा और बेदसा की गुफाएँ हैं। इन गुफाओं में अन्य स्थानों की गुफाओं की कला पाई जाती है। यहां भी मेला सा लगा रहता है और यह प्राचीन तीर्थ स्थल बना हुआ है। यह भोगियों की कीड़ा, स्थली और विलासियों की शरण गाह है। ये गुफाएँ इस्मलिंग, चोरबाजारीं और काले धंधों के अड्डे हैं। इन पर किसी की निगाह नहीं जाती है। धर्म और संस्कृति की आड़ में यह सब होता है।

गोआ का मंगेसी मन्दिर

गोआ में कई जगह हिन्दुओं के पुराने मंदिर के खंडहर है। यहां के मंगेश, शांता दुर्गा, हैगेश मंदिर है। ये मंदिर गोआ में हिन्दुओं के तीर्थ मंदिर है। इन मंदिर में कुत्ते, सुअर तो जा सकते हैं, पर अछूत का बच्चा भी उसमें प्रवेश नहीं कर सकता है। गोआ का यह स्थल विदेशियों का आश्रय स्थल है। गोआ के मंदिरों में कई मन सोना लगा हुआ है जिसकी करोड़ों रूपया कीमत है। मंदिर और मूर्ति स्वर्ण मण्डित है। करोड़ों का व्यापार, उद्योग दुकाने, वाहन इन मंदिरों में चल रहे हैं। 500 से अधिक ब्राह्मण इन मंदिरों में प्रतिदिन निठल्ला भोजन करता है। इन मंदिरों के पण्डे तीर्थयात्री के लिए भोजन, निवास, सुरा सुन्दरी से लेकर सब विलासता की वस्तुएँ उपलब्ध कराते हैं। जुआ, लाटरी में ये पुजारी हिस्सा लेते हैं।

अहमदाबाद के मंदिर

अहमदाबाद अहमदशाह को नाम पर पड़ा है। यहां का वस्त्र उद्योग तो प्रसिद्ध है ही। बहुत से प्रसिद्ध मंदिर और तीर्थ स्थान भी है। इन मंदिरों में पत्थर और लकड़ी की नक्काशी का सुन्दर काम देखा जाता है। अहमदाबाद से 104 किलो मीटर दूर मोघेरा का सूर्य मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। माउण्ट आबू के पास अरासुर पहाड़ी पर स्थिति अबांजी गुजरात का एक प्रसिद्ध स्थान है। माउण्ट आबू के पास अरासुर पहाड़ी पर स्थिति अबांजी गुजरात का एक प्रसिद्ध स्थान है। यहां अम्बाजी का मंदिर है। बालाराम महादेव मंदिर भी प्रसिद्ध मंदिर है। इन मंदिरों में सुन्दर नक्कासी, कामुक वीणा में में लिप्त, तस्वीर कला का स्वरूप है। अहमदाबाद के इन मंदिरों की करोड़ों की सम्पत्ति, सोना, चांदी और भूमि है। दो हजार ब्राह्मण इन मंदिरों से निठल्ला पतला है। प्रति मंदिर में औसतन 5 लाख रूपया सालाना आय होती है। देव–दासियां यहां भी मिलती हैं जो पण्डो, भक्तों और यात्रियों की वासना तृप्ति की साधन होती हैं। मंदिरों में अवैध धंधे चलते हैं। यहां जब मेला लगता है तो ठगी, जेबकतरी सब चलती है। इन मंदिरों के तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए अनेक पश्चिमी ढंग के होटल बने हुए हैं जिनमें रात के भोजन में पशु पक्षियों के मरे गोश्त के साथ यौवनाओं का जिन्दा गोश्त भी उपलब्ध रहता है। यहां मन की शांति के बाद तन की शांति भी मिलती है।

अजमेर

अजमेर जयपुर से 131 किलोमीटर दूर है। यहाँ तीर्थराज पुष्कर हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है यहां ब्रह्मा जी का मंदिर है और एक बहुत बड़ा तालाब है। अनेक छोटे–छोटे और भी मंदिर हैं एक देवी का मंदिर है जो बहुत ऊँचे पहाड़ी पर बना हुआ है। पुष्कर में लोग स्नान करके पण्डों को दान देते हैं। तीर्थराज के दर्शन करने वालों का तांता लगा रहता है। यहां के पुष्कर के पण्डों ने घाट–बांट रखे हैं जहां पर उन्हीं की आमदनी होती है। करीब 500 पण्डो की जीविका इस तालाब से चलती है। श्रद्धालु लोग मछलियां को दाना ले जाते हैं। यह तालाब बहुत गंदा है लाखों मछलियां इस तालाब में

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

हैं। इसी में लोग धर्म के नाम पर स्नान करते हैं। पूरे भारत में पुष्कर ही एक ऐसा स्थान है जहां ब्रह्मा जी का मंदिर है उनकी कहते हैं कि पूजा कहीं नहीं होती है न कहीं मंदिर है उन्होंने अपनी सगी बहन के साथ बलात्कार किया था। और इसी से उनकी श्राप देकर पूजा निषिद्ध की गई थी। ब्रह्मा ब्राह्मणों के पूर्वज है। यह तीर्थ बहनों के बलात्कारी ब्राह्मणों के पूज्य स्थल हैं। हिन्दुओं में तो विष्णु इन्द्र आदि अनेक अन्य बलात्कारियों की भी पूजा होती है। इस घटना के बाद से तो बलात्कारी ब्राह्मण भी पूज्यनीय बन गया है। इस पुष्कर तीर्थ के नाम सैकड़ों बीघा भूमि है जिनका भोग पण्डे भोगते हैं। भोगी बलात्कारी भगवान पर लाखों रूपया सालाना चढ़ावा चढ़ता है। ऊबड़–खाबड़ स्थान यहां के भोग स्थान हैं। यह तीर्थ स्थल भ्रष्टाचार, विलासिता, अंध–विश्वास, पाखण्ड और लूट का स्थान है।

उदयपुर

जहां जगदीश जी का मंदिर प्रसद्धि है। 21 कि.मी. दूर एकलिंग का भव्य मंदिर है। ऊंची दीवारों से घिरा यह 108 मंदिरों का समूह है। नागदा का सास बहू का मंदिर नाथ द्वारा का नाथ जी का मंदिर है। नाथ द्वारा के मंदिर की सम्पत्ति करोड़ों की है। होली दीवाली त्यौहारों पर यहां लाखों की भीड़ होती है और इन अवसरों पर एक–एक दिन में एक–एक लाख रूपए की आय होती है। इस मंदिर का खर्चा 5 हजार रूपया प्रतिदिन है जिसके पण्डों का खर्चा, मंदिर का खर्चा व अन्य व्यय सम्मिलित हैं। इस मंदिर की अपनी निजी बसें, निजी दुकानें और हजारों बीघा निजी जमीन है। यहां के पण्डों ने घोर अंध–विश्वास फैला रखा है और यह पण्डे सरेआम यात्री की गठरी पर डकैती डाल लेते हैं। नाथ द्वारा के दुकानों में शराब की दुकानें भी हैं। सोने चांदी के चक्की के पाट, मूर्ति के मुकट और मंदिर के कलश हैं। इस मंदिर में स्त्रियों के शरीर की घर्षण से वह गति हो जाती है कि हफ्तों उनके स्तन मुख और मांसल अंगों में दर्द होता रहता है। शराब, भांग, गांजा भी खूब मिलता है। शराब, बीड़ी, सिगरेट तक मन्दिर के खर्च में लिखा मिलेगा जिनका प्रयोग पण्डे करते हैं।

108 मंदिरों के समूह पर कई बार मेला लगता है। इन मंदिरों की हजारों बीघे भूमि है। दुकानें हैं, लाखों का चढ़ौना होता है। कोढ़ी भिखमंगे और निठल्ले पण्डों के साथ ही यहां पर चोर, ठग, जेबकतरे लुटेरे गुण्डे, अय्यास, बलात्कारी लोगों की भीड़ लगी रहती है जो स्वयं महन्त जी की अनुमति से यहां अपने काम करते हैं जिनका कमीशन तय होता है। मंदिर समूह की लाखों रूपया प्रतिदिन की आय होती है जिसे निठल्ले पण्डे खाते हैं। यहां अम्बिका माता मन्दिर के राजस्थान का खजुराहो है। यह इतिहास प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर की दीवारों पर भोग क्रियाओं के आसनों की तस्वीर विभिन्न आकृतियों में बनी हुई है जो वासना की खुली किताब है। जो यात्री भगवान के दर्शन करने आता है वह भोग लिप्सा में लिप्त हो जाता है। यह भगवान का नहीं भोग का स्थल है। इस मंदिर में यात्री के लिए नारियल और नारियां दोनों की पूर्ति होती है। कीमत में अन्तर यह है कि एक 20 रूपए में तो दूसरी 200 रू. में एक बार के लिए मिलती है। नारियल दुकानों पर मिलता है और नारी पण्डे से सर्म्पक करने पर।

साभार :
हिन्दुओं के वृत, पर्व और त्यौहार
पेज संख्या 186 से 221 तक
एस. एल. सागर

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।